बरन संकल्प मासिक समाचार पत्र

RNI No. : JHAHIN / 2014 / 58757 (स्थापित : 1993) मार्च 2019, वर्ष–5, अंक–4

सम्पादक एवं प्रकाशक बरन संकल्प
सचिव, बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
बालेश्वर प्रसाद, कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद–826001, ☎ 9431725382, 7717762093

सह–सम्पादक – **डा भुवनेश्वर मोदी**, पतरातु
☎ 9431534443

मुद्रक : बिपिन कुमार चौरसिया
प्रेस : बिपिन प्रिंटिंग प्रेस, कतरास रोड, धनबाद
☎ (0326) 2308009

स्वामित्व : बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)
प्रकाशन स्थान कस्तुरबा नगर, लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद 826001 (झारखण्ड) E-mail : baransankalp@gmail.com

बरन संकल्प (एक निबंधित न्यास)

अध्यक्ष : कृष्णचंद्र अशान्त, शिव मंदिर चौक, न्यू कॉलोनी, जगजीवन नगर, धनबाद ☎ 2200243, 9934341558

उपाध्यक्ष : विमल कुमार बरनवाल, खमरिया, (भदोही) ☎ 9794862972, 9415865614

कोषाध्यक्ष : बिशेश्वर प्रसाद, MIG/B-18, हाउसिंग कॉलोनी, धनबाद, मो० नं० – 7294032449

विषय सूची

			पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	बालेश्वर प्रसाद	2–3
2.	याद बहुत आती है	सुभद्रा गुप्ता बरनवाल	3
3.	चमकता चाँद अंबर पर	मोहन प्र. बरनवाल	7
4.	एक दृढ़ समर्थ सरकार चाहिए	अनन्त नारायण लाल	8
5.	बेचैन जिन्दगी	डॉ. भुवनेश्वर मोदी	9–13
6.	स्वार्थ भरी दुनिया	विनोद कु. बरनवाल	13
7.	ध्रुव	काकेमानी	15–24
8.	आज वसन्त आया है	रामेश्वर प्र. वर्णवाल	24
9.	वर–वधू		25–28
10.	ओल्ड इज गोल्ड	प्रताप नारायण बरनवाल	28–31
11.	ऐतिहासिक दिन	पी.सुरेन्द्र	31–32
12.	एक निवेदन	समीरकान्त लाल	32
13.	हेल्दी रेसिपी		34
14.	स्वास्थ्य परिचर्चा		35

बरन संकल्प न्यास के न्यासी परिषद के अन्य सदस्य

श्री अनन्त नारायण लाल, धनबाद – 9431377604, श्री पी० एल० बरनवाल, धनबाद – 9431187661, श्री विष्णु प्र० गुप्ता, झरिया – 9431162609, श्री बी० एल० बरनवाल, धनबाद – 9431315440, श्री सुनील कश्यप, धनबाद – 9431125696, श्री अमरेन्द्र नारायण, धनबाद – 9835553936, डा० महेन्द्र प्रसाद, धनबाद – 9431730154, श्री मधुकर प्रसाद, धनबाद – 9334014556, श्री सदानन्द प्र० बरनवाल, जैना मोड़ – 9430756496, श्री जगदेव प्र० बरनवाल, जमशेदपुर – 0657–2290174, श्री राघेश जी बरनवाल, मिर्जापुर – 9936119805, श्री ओमनन्दन प्रसाद, धनबाद – 9431191440, श्री अजित कुमार बरनवाल, आसनसोल – 9002726608, श्री महेश्वर मोदी – 9572112499, श्री साधुशरण प्रसाद, 9470570757

शुल्क "बरन संकल्प" के 01910100925352, UCO Bank, IFSC - UCBA0000191 के A/c में जमा करें।

न्यासी शुल्क 1200/–

प्रकाशित सभी लेखों एवं नकल कर भेजे गये रचनाओं का उत्तरदायित्व रचयिताओं का है। सभी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र धनबाद होगा। 'बरन–संकल्प' में प्रकाशित रचनाओं के विचार संबंधित रचनाकारों के है, 'बरन–संकल्प' के नहीं –सम्पादक

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

संभवतः मार्च के किसी सप्ताह में चुनाव आयोग द्वारा अप्रैल–मई 2019 में लोकसभा चुनाव की घोषणा हो जाय। ऐसे में देश के मतदाताओं का पुरानी सरकार या सरकार के बदलाव का मन मिजाज जाना जाएगा। तब क्या जनता भाजपा के प्रति अपना आक्रोश दिखलाएगी या बनाए रखेगी? यह महत्वपूर्ण फैसला प्रधानमंत्री के दो बड़े दावेदारों के बीच अर्थात् नरेन्द्र मोदी और राहुल गाँधी में होना तय है।

इस वर्ष के अप्रैल–मई में देश की 17वीं लोकसभा का चुनाव होना तय है। अब तक के राज्य चुनाव अलग–अलग राज्यों को लेकर वहाँ के स्थानीय नेतृत्व को लेकर हुए जिनमें विगत वर्ष के छः राज्य चुनावों में भाजपा को मात खानी पड़ी। अब जबकि देश के नेतृत्व के नाम पर जिसके दो प्रबल दावेदार–भाजपा या एनडीए के नरेन्द्र मोदी तथा यूपीए या काँग्रेस के राहुल गाँधी होंगे, देश की जनता को इन्हीं दो में से किसी एक को चुनना है। यों तो भले ही काँग्रेस सर्वाधिक संख्या वाले दल के नेता को ही प्रधानमंत्री का पद देने की बात कहे, पर इस विषय में काँग्रेस की नीयत पर कभी विश्वास नहीं किया जा सकता। राहुल गाँधी काँग्रेस के सर्वमान्य नेता हैं, इसे बहुत पहले से ही काँग्रेस घोषित कर चुकी है। ऐसा क्यों ? क्योंकि ये युवा नेता हैं और भारत के युवकों के सपने साकार करने की सूझ–बूझ इनमें है। पर देश के युवक तनिक विचार कर देखे कि राजस्थान के लिए सचिन पायलट और मध्यप्रदेश के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया इन राज्यों में नेतृत्व देने योग्य नहीं थे। अथवा छत्तीसगढ़ और कर्नाटक क्या युवा काँग्रेसी विधायकों से विधान सभा खाली था जहाँ कर्नाटक में जेडीएस के आगे घुटने टेक सरकार में सम्मिलित हुई छत्तीसगढ़ में बुजुर्ग काँग्रेसियों के आगे एक न चली। क्या कारण था कि राजस्थान और मध्यप्रदेश में बूढ़े काँग्रेसियों के आगे राहुल गाँधी को अपना हथियार डालकर लुभावनी बातें बोल कर वहाँ के युवा कार्यकर्ताओं का मुँह बन्द कर देना पड़ा। वस्तुतः अनेक घोटालों में पूर्व के काँग्रेसी मंत्री या फिर भविष्य में यूपीए के महागठबंधन के कई सिरमौर ऐसे फँसे हैं जिन्हें बाहर निकलने के लिए एक कठपुतले नेतृत्व की जरुरत है और यह नेतृत्व ये सब मिलकर राहुल गाँधी को देना चाहते हैं। आखिर क्या कारण है कि इन सबों की नजर मोदीजी पर ही लगी है। सच्चाई यह है कि इनकी कमर पर इस तरह मोदीजी प्रहार कर रहे हैं कि इन्हें हटाये बिना इनका राजनीतिक मौत अवश्यंभावी है, इसमें दो मत नहीं।

अब देश के वोटरों की स्थिति देखिए। वर्तमान में देश में लगनग 80 से 100 करोड़ के लगभग वोटर हैं जिसका 5 से 10 प्रतिशत के बीच नये–नये वोटर अठ्ठारह वर्ष या इससे अधिक उम्र के हैं। लगभग 10 प्रतिशत वोटर पचास से उपर वाले हैं। शेष लगभग 80 प्रतिशत वोटर 25 से 50–60 वर्ष के परिपक्व बुद्धि वाले, समझदार और उचित फैसला लेने वाले हैं। नये–नये वोटर तो अति उत्साह में बह जाते हैं। इनके रुख का कोई हिसाब–किताब नहीं होता। बूढ़ों का फैसला परिवार और समाज की इच्छानुसार होता है। यह गाँव देहातों में अधिक देखा जाता है जिन्हें समाचार पत्र और टीवी आदि से कम संपर्क हो पाता है। शहरों में क्या जवान, क्या बुजुर्ग सभी संचार के साधनों का इस्तेमाल कर देश–दुनिया की खबरों से वाकिफ होते हैं। मोदीजी के शासन काल के पाँच वर्षों में युवा एवं प्रौढ़ वर्ग के वोटरों को ही जानने समझने का अवसर मिला होगा। इस बीच कई महत्वपूर्ण फैसले मोदी जी के शासनकाल में लिये गए जो आज तक काँग्रेसी सरकार या फिर यूपीए सरकार अपने शान काल में नहीं ले पायी। ये वोटर इस नजरिया से भी देखेंगे। इन पाँच वर्षों में कई काम ऐसे हैं जो योजनान्तर्गत पूरे नहीं हो पाये हैं। सरकार बदलने पर आधे–अधूरे भी रह जा सकते हैं। इस मोदी सरकार की

Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नीति, पिछड़े राज्यों के विकास की ओर बढ़ाये गए कदम को भी परखना पड़ेगा। सरकार की रोजगारोन्मुखी नीति क्या रही और गरीबों, पिछड़ों, दलितों, मुस्लिम महिलाओं, परिवहन एवं संचार के साधनों जैसे विकासोन्मुखी कार्यों को करने में यह सरकार कहाँ तक सफल हुई यह भी वोटर परखेंगे ही। शासन का अनुभव किसे कितना है यह भी देखना–सुनना और समझना होगा।

एक बात यह भी है कि वोटरों को यह भी तौलना होगा कि किस नेता को कितना कार्यानुभव है। राहुल गाँधी अभी सीधे तौर पर मात्र एक सांसद हैं। वे न तो किसी राज्य के मुख्यमंत्री रहे और न ही केन्द्र में कोई मंत्री। वे मात्र संसद में विपक्ष के नेता हैं जिन्हें रोज अपने बुजुर्ग नेताओं से राजनीति की शिक्षा लेनी पड़ती है। जबकि मोदी जी लगभग बारह वर्ष तक गुजरात के मुख्यमंत्री बनने के बाद लोकसभा से चुनकर प्रधानमंत्री बने हैं। उनके पास वाचनशक्ति, शासन का अनुभव, विदेश नीति में दक्ष और विश्वमंच पर चमके सितारे की तरह उभर कर आये हैं। मतदाताओं को इस ओर भी ध्यान देना होगा। और सबसे बड़ी बात यह कि कथित राफेल मुद्दा को हटा दिया जाय तो उन पर कोई इलजाम नहीं लगा है। और, यह भी ऐसा इलजाम जिस पर केवल राहुल गाँधी द्वारा शंका ही जाहिर की जा रही है, उनके पास कोई पुख्ता प्रमाण नहीं है जैसा वे स्वयं कह रहे हैं। इनके अतिरिक्त कई बातें हैं जो राहुल की अपेक्षा मोदी भारी दीख रहे हैं।

ऐसे में अब मतदाताओं की भी परीक्षा की बारी आनेवाली है कि इनमें से उन्हें क्या चाहिए कलम (मोदी) की नोंक या तलवार (राहुल) की धार ? फैसला अब उन्हीं के हाथ में है। उम्मीद है भारत के मतदाता उचित समय पर उचित फैसला करेंगे। इस फैसले में भारतीय किसानों की भूमिका अति अहं होगी। संभव है, कॉंग्रेस की ओर से उन्हें कर्ज माफी का लोभ दिया जाय, कुछ कहा नहीं जा सकता।

बालेश्वर प्रसाद
सम्पादक

"याद बहुत आती है!!"

तेरी याद में आज लिखती हूं पाती !
यूं तनहाइयों में तेरी याद आती !
कि जैसे कमल अपनी पंखुरी खोले !
घटाओं से झांके शशी हौले हौले !
जब गुन–गुन सुनाते हैं भंवरों की टोली !
जब देती है ताने पपीहे की बोली !
हवाओं के झोंके से उठती है टीसें !
तो खुल जाती है मन की सारी दरीचे !
जब पीपल के पत्तों से आती सदाएं !
मेरा दिल तुझे होके बेबस बुलाए !
यूं बचपन की यादों में मिलना बिछड़ना !
तेरा दूर जाके न फिर पास आना !
जब आमों की बगिया में कोयल पुकारे !
बहे मस्त चंचल पवन के झकोरे !
तो सुन री सखि ! तेरी यादें सताती !
अब करती हूं बन्द अपनी छोटी सी पाती !
हूं तेरी प्रतिक्षा में पलकें बिछाये!
अगर तू न आये तेरा खत ही आयें !
तेरा खत ही आये ! तेरा खत ही आयें !!

सुभद्रा गुप्ता बरनवाल
मोती सोप, झरिया

नोट – बचपन की दो सहेलियां जब आपस में बिछड़ जाती है, और एक दूसरे से बहुत दूर चली जाती है, तब अपने मनोभावों को व्यक्त करती, पीड़ा का अहसास कराती है इस कविता की पंक्तियां – कालान्तर में एक दूसरे के खत भी आने जाने बन्द हो जाते हैं तब अपने मन के भाव और व्याकुलता को एक सखि अपने खत के माध्यम से कैसे व्यक्त करती है – और प्रकृति को अपनी गवाही, अपने प्यार की साक्षी बनाती है।

(धुन है – ये दौलत भी ले लो !)

Scanned by CamScanner

नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजन्स अधिनियम (एनआरसी)

एनआरसी पर चर्चा करने के पूर्व इसकी पूर्व पीठिका समझना जरुरी है। भारत विभाजन के उपरांत भयानक स्तर पर हिंसा और मार-काट के बाद वृहत् पैमाने पर दोनों ही देश से लोगों का पलायन हुआ। खासकर पंजाब और बंगाल की स्थिति काफी शोचनीय रही, क्योंकि मूलतः इन्हीं दो राज्यों के विभाजन से पाकिस्तान का निर्माण हुआ था। देश के दूसरे भाग जैसे कि उ.प्र. के मुसलमान पश्चिमी पाकिस्तान में, तो बिहार के मुसलमान पूर्वी पाकिस्तान में पलायन कर गए थे। इसी प्रकार पाकिस्तान के अन्य भागों से भी हिन्दू लोग आए। पश्चिमी पाकिस्तान के हिन्दू दिल्ली में तो पूर्वी पाकिस्तान के हिन्दू कलकत्ता की ओर प्रमुखतः रुख किये रहे। पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) से शरणार्थी के रुप में असम एवं बंगाल में भी लोग आए। उधर ढाका और करॉंची जैसे शहरों की भी स्थिति थी। इन विस्थापितों के वजह से काफी विकट स्थिति बन गई थी। इसके समाधान और शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए भगीरथ प्रयत्न किये गए और संविधान में संशोधन कर अनेक नियम-उपनियम बनाए गए। उस वक्त पूरे देश में इन शरणार्थियों के प्रति गहरी सहानुभूति थी। सो सभी तन-मन-धन से उन्हें सहयोग भी कर रहे थे।

इसके बावजूद कुछ लोग उधर ही वहीं रह गए। खासकर सुदूरवर्ती इलाकों सिंध-बलुचिस्तान आदि के हिन्दू-सिख आदि आने से रह गए थे। अपनी मातृभूमि का मोह कहें या अपनी अपार चल-अचल संपत्ति का मोह, मनुष्य को अपनी जमीन त्यागने नहीं देता। जैसे कि जालंधर में ज्वाला देवी और ढाका में ढाकेश्वरी देवी का मंदिर सती के 51 शक्तिपीठों में माना जाता है और स्वाभाविक ही वह क्षेत्र हिन्दू बहुल ही रहा होगा। फिर पाकिस्तान का लरकाना गुरुनानक की जन्म स्थली है, सो वह सिखों के लिए महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। स्वाभाविक ही वह सिख बहुल होगा। इसी प्रकार बौद्ध-जैन-ईसाई और पारसी समुदाय के लोग यहीं रह गए कि झगड़ा तो हिन्दू-मुस्लिम का है। सो उन्हें कोई क्यों कर नुकसान पहुँचाने लगेगा।

मगर पाकिस्तान का जन्म ही मुस्लिम धर्म की नींव पर हुआ था। सो जो वहाँ मुस्लिम नहीं थे, उनको तंग करने का खेल शुरु हो गया। ताकि वे भाग जाएं, ताकि उनके चल-अचल संपत्ति पर कब्जा जमाया जा सके या वे मुस्लिम धर्म अपना लें। भारत-पाक तनाव और युद्ध के वक्त तो उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती थी। वैसे भी सत्ता के सर्वोच्च पदों की कौन कहे, उच्च पदों पर भी गैर-मुस्लिम पहुँच नहीं पाते थे। कुल मिलाकर कहे तो उनकी स्थिति दोयम दर्जे की थी। मुहावरे की भाषा में कहें तो यह तलवार की धार पर खड़े रहते थे। हॉंलाकि जिन्ना ने उन्हें भरोसा दिलाया था कि उनके साथ बराबरी का व्यवहार किया जायेगा। मगर 1948 में उनकी मौत हो गई। वैसे भी विभाजन के बाद पाकिस्तान में जिन्ना वैसे ही अप्रासंगिक थे, जैसे कि भारत में गांधी। वैसे सच तो ये भी था और अभी भी है कि भारत से पाकिस्तान गए मुसलमानों के साथ भी भेदभाव किया जाता है। उन्हें अभी भी मोहाजिर (शरणार्थी) ही कहा जाता है।

समय और स्थिति बदली तो पाकिस्तान की स्थिति डुलमुल होने लगी। उर्दू के राजभाषा बनते ही पूर्वी पाकिस्तान में इसका विरोध होने लगा था, जिसे बंदूक के बल पर दबाने की कोशिश की गई। पश्चिम पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान की भौगोलिक दूरी हजारों मील की थी। दूसरे वे एक दूसरे से किसी स्थल मार्ग से जुड़े भी नहीं थे। पूर्वी पाकिस्तान को

Scanned by CamScanner

पश्चिम पाकिस्तान एक उपनिवेश से ज्यादा दर्जा देने को तैयार नहीं था। ऐसे अनेक कारण थे जिसकी वजह से पाकिस्तान से बांग्लादेश अलग हुआ। इसके अलग होने से यह धारणा ध्वस्त हुई कि धर्म के आधार पर राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) की हजारों मील लंबी सीमा प.बंगाल, बिहार, त्रिपुरा और असम के साथ लगती है। बांग्लादेश की आबादी आरंभ से ही सघन रही है। इसलिए इधर के लोग आरंभ से ही रोजी-रोजगार के लिए असम में आते रहे हैं। प.बंगाल और त्रिपुरा में तो खैर भाषाई सौहार्द भी काम करता था। बिहार के जिलों में भी कमोवेश यही स्थिति थी। और इन राज्यों ने इस समस्या पर कभी विशेष ध्यान भी नहीं दिया था। लेकिन असम में स्थिति अलग थी। रोजी-रोजगार के अलावा सस्ते श्रम के कारण बांग्लादेशियों को यहां आने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता था। क्योंकि स्थानीय लोग न तो महत्वाकांक्षी थे और न ही विशेष श्रम करना उनकी आदतों में शुमार था।

मगर पाकिस्तान समर्थकों की नजर असम के सुजला-सुफला-शस्य-श्यामला जमीन पर आरंभ से थी। और वह इसे पाकिस्तान में मिलाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सुनियोजित रुप से मुस्लिमों को इधर भेजकर बसाने की मुहिम चला दी, ताकि चुनाव के वक्त यहाँ का बहुमत पाकिस्तान में मिलाये जाने के पक्ष में मतदान कर सके। असम के नेता गोपीनाथ बोग्दोलाई ने इसके विरुद्ध जबर्दस्त आंदोलन चलाया, जिसमें उन्हें सफलता भी मिली। इसलिए 1946 के चुनाव में असम के भारत में मिलाये जाने के पक्ष में मतदान संभव हो सका और असम भारत का हिस्सा बना। गोपीनाथ बोरदोलाई को असमी जनता ने ''लोकप्रिय'' की उपाधि दी और वे स्वाधीन भारत के असम प्रांत के प्रथम मुख्यमंत्री भी बने। बाद में उन्हें भारत रत्न भी मिला।

फिर भी बांग्लादेश की वृहत् सीमाएं, जहाँ असम से लगती है, उधर से लोगों का आगमन होता रहा। क्योंकि सीमाएं पूरी तरह खुली थी और सीमाओं का सही ढंग से आकलन भी नहीं हुआ था। पहले तो पाक सरकार के अत्याचारों से त्रस्त होकर हिन्दुओं का ही पलायन होता था। बाद में रोजी-रोटी की संभावना और सरकारी अत्याचारों से त्रस्त होकर मुसलमान भी आने लगे। चूँकि बांग्लादेश और असम का खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा लगभग समान ही है, इनमें फर्क कर पाना एक मुश्किल काम है। आमतौर पर ये अपने रिश्तेदारों, साथियों और परिचितों के सहारे ही यहाँ पहुँचते हैं और यहाँ के स्थानीय जीवन में घुल-मिल जाते हैं। थोड़ा पैसा खर्च करने पर पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों का भी उन्हें सहयोग मिल जाता है। और यह हिन्दू और मुस्लिम दोनों के लिए सुविधाजनक है। बाद में यह असम की सीमाओं को पार कर पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों त्रिपुरा-मेघालय-नागालैंड- मणिपुर आदि तक पहुँचने लगे।

1971 के 'बांग्लादेश मुक्ति संग्राम' जो बाद में भारत-पाक युद्ध में बदल गया, के बाद ''बांग्लादेश'' का उदय तो हुआ। मगर तब तक लाखों बांग्लादेशी शरणार्थी बनकर इधर चले आए थे। युद्ध खत्म होने के उपरांत कुछ वापस लौट गए। मगर एक वृहत् जनसंख्या इधर ही रह गई। असम प्रांत इसका बोझ उठाने में असमर्थ था। सो यहाँ छिटपुट आंदोलन चलने लगे, जो बाद में वृहत् रुप धारण करने लगे। क्योंकि अब उन्हें असमिया अस्मिता पर खतरा मंडराता दिखने लगा था। अल्फा (आल असम स्टुडेंट यूनियन) और असम गण परिषद ने इसमें वही भूमिका निभायी। नतीजतन 1977 में जनता पार्टी की सरकार केन्द्र में आई तो यहाँ भी अगप की सरकार बनी। ''छात्रों की पहली सरकार'' के रुप में इसे प्रचार भी खूब मिला। मगर दुर्भाग्यवश यह सरकार भी वह काम ''बहिरागतों का निष्कासन'' कर न सकी। इसके कारण अनेक हैं, जिनकी चर्चा फिर कभी। 1984 ई. में पूरे बहुमत और धूमधाम के साथ राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने एक झटके में अनेक काम किये। उनमें से एक महत्वपूर्ण काम 1985 ई. में असम के आंदोलनकारियों

Scanned by CamScanner

के साथ "असम समझौता" भी किया, जिससे असम का आंदोलन, जिससे उग्रवादी संगठन अल्फा (युनाइटेड लिबरेशन फेडरेशन ऑफ असम) की गतिविधि पर विराम लगा। इस समझौते के अनुसार "1951–1961 के बीच असम आए सभी लोगों का पूर्ण नागरिकता और मतदान करने का अधिकार मिला। 1961–1971 के बीच आने वाले लोगों को नागरिकता देना तय किया गया मगर वे मतदान नहीं कर सकते थे। 1971 के बाद आये लोगों को वापस भेजने पर सहमति बनी।"

अब नागरिकता अधिनियम 1955 को देखा जाए, जिसके अनुसार "हर वो व्यक्ति भारत का नागरिक है, जिसका जन्म भारत में हुआ है। उसके माता–पिता भारतीय हों या तय समय सीमा की अवधि से ज्यादा समय तक भारत में रहा हो। यह तय अवधि 12 वर्ष की है।

2016 ई. में इसी नागरिकता विधेयक में संशोधन कर प्रस्तुत किया गया। इसके लागू होते ही पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के अल्पसंख्यक समुदाय के लोग, जो भारत में अवैध प्रवासी के रुप में रह रहे हैं, उनको भारतीय नागरिकता की अनुमति दे दी जाएगी। यह अल्पसंख्यक समुदाय हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और इसाई आदि हैं। इन देशों से अवैध रुप से आए मुस्लिम अवैध आप्रवासियों के लिए इस विधेयक में कोई जगह नहीं है। दूसरा मुख्य संशोधन यह है कि इस विधेयक में 12 वर्ष की तय अवधि को घटाकर 06 वर्ष किया जाना है।

अब इन दोनों 'असम समझौता' और 'नागरिकता संशोधन विधेयक' में टकराव है। यह एनआरसी किसी सरकार का प्रस्ताव या कारनामा नहीं है। जैसे कि संविधान द्वारा चुनाव आयोग को स्वतंत्र किया गया है, वैसे ही सर्वोच्च न्यायालय भी अपनी संविधान सम्मत अधिकार रखता है। और उसी ने इस एनआरसी की व्यवस्था की थी। सरकार यह चाहे केन्द्र की हो या राज्य की, उसकी जिम्मेदारी तो बस उसे कार्यान्वित करने की थी। सर्वोच्च न्यायालय ने जब केन्द्र और असम सरकार को एनआरसी के तहत शीघ्र काम करने के लिए फटकार लगाई, तो सरकारों को इस पर शीघ्रतापूर्वक काम करने का होश हुआ। बात दरअसल यह थी कि उन्हें लग रहा था कि कहीं एनआरसी के तहत नामावली के प्रकाशन पर दंगा या गृह–युद्ध न छिड़ जाए। असम के संबंधित मंत्रियों ने यही आशंका व्यक्त की थी, जिसे ममता बनर्जी खुलकर बोल चुकी थी। बाद में यह अपने इस बात पर मुकर गई। फिलहाल जो आंकड़े प्रकाशित हुए, उनके अनुसार लगभग चालीस लाख लोगों के नाम इसमें नहीं है। और यही वह आंकड़ा है, जो असमी समाज को भयभीत किये हुए है कि इन अवैध आप्रवासियों के चलते उनकी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई अस्मिता खतरे में पड़ जायेगी। असमी जनमानस का सोच यही है कि वह इस 40 लाख आप्रवासियों का बोझ अकेले क्यों उठाये।

शेष भारत के लोग, जहाँ जाति और धर्म के संघर्ष चलते रहते हैं, इसे हिन्दू–मुस्लिम चश्मे से देख रहे हैं। उन्हें इसका कम ही अंदाजा है कि चिंता का एक वाजिब कारण भाषा भी हो सकती है। और असम को शुरु से ही बांग्ला भाषा से अलग पहचान के लिए संघर्ष करना पड़ा है। असम के एक वृहत् इलाके ब्रह्मपुत्र घाटी से सभी परिचित हैं। असम का एक छोटा इलाका बराक घाटी है, जिसमें तीन जिले कछाड़–करीमगंज– हैलाकांदी पूर्णतः बांग्लाभाषी क्षेत्र हैं और यहाँ की राजभाषा भी बांग्ला ही है तथा ये बांग्लादेश के सीमावर्ती हैं। उधर ब्रह्मपुत्र घाटी के कुछ जिले कामरुप–धुवरी–नगांव आदि भी बांग्लादेश के सीमावर्ती हैं और यहाँ भी बांग्ला भाषा और संस्कृति की घुसपैठ हो चुकी है। स्पष्ट है कि असमी जनमानस इससे मुक्ति चाहता है। उधर दीर्घावधि से रहनेवाले कब चाहेंगे कि वह अपनी भाषा, संस्कृति और जमीन को त्याग दें। सचमुच स्थिति विकट है।

Scanned by CamScanner

दरअसल सभी पार्टियां इसे अपने-अपने नजरिये से देख रही है। आरोप-प्रत्यारोप के बीच सभी को अपने वोट बैंक की चिंता है। किसी को हिन्दू वोट दिख रहा है, तो कोई मुस्लिम वोट पर राजनीति कर रहा है। किसी को हिंदी भाषियों की चिंता है, तो कोई नेपाली या चाय बागानी की बेचारगी पर रोना रो रहा है। राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस मुस्लिम आप्रवासियों के, तो भाजपा हिन्दू आप्रवासियों को बचाना चाहता है। शेष भारत के लोग भी इसे हिन्दू-मुस्लिम नजरिये से देख रहे हैं। जबकि असम पर इन दोनों से असमी लोगों को खतरा दिखता है। असमी संस्कृति एक तरफ मुस्लिम संस्कृति से, तो दूसरी तरफ बंगाली संस्कृति के असमिया संस्कृति पर हावी होने को लेकर आशंकित है। उनकी आशंकाओं पर गंभीरतापूर्वक चिंतन-मनन करेंगे, तभी बात बनेगी।

यह सही है कि एनआरसी की लिस्ट में वैसे भी नाम छूट गए हैं, जो नागरिकता का हक रखते हैं। जैसे कि एक ही परिवार में किसी के पिता का तो किसी के पुत्र का, किसी के पति का तो किसी की पत्नी का नाम नहीं है। ऐसा भी देखने में आया कि कुछ वर्तमान के विधायक-मंत्री आदि के नाम नहीं हैं। असम में हिन्दीभाषी, चायबागानी, नेपाली आदि समुदाय भी अच्छी खासी संख्या में हैं और उन्हें भी इससे शिकायत है कि एनआरसी में जानबूझकर उनके नाम जोड़ने में कोताही की जा रही है। यही सब कुछ देखते हुए सर्वोच्च न्यायालय और केन्द्र सरकार ने दिसंबर तक आपत्ति करने और नाम जोड़ने का समय दिया है। वर्ष 1919 ई. में संघ सरकार का चुनाव होना है। तब तक सब कुछ ठीक कर लेने की बात की जा रही है।

चितरंजन लाल 'भारती'
क्वा. नं. बी-152, एचपीसी टाउनशिप
पो.-पंचग्राम, असम-788802

चमकता चान्द अम्बर पे

चमकता चान्द अम्बर पे, प्रकाशित यह धरा होती
वो अपनी रश्मियों मोहता, ये दुनियां निम्न में सोती
उसके स्निग्धता की, लेखकों कवियों में है चर्चा
वो देता रोशनी सबको, बिन पैसे बिना खर्चा।
बड़प्पन है ये उसकी, चान्दनी सब पर बरसती है
अंधेरे जब भी आते हैं, तो ये धरती तरसती है
उजाले सबको भाते हैं, जो कोई दे नहीं सकता
जगह चन्दा की पर कोई, कभी भी ले नहीं सकता।
करें हम प्रार्थना उसकी, न हो वंचित कभी कोई
हुआ जब भी अंधेरा, सारी दुनिया फूटकर रोई
ग्रहण लगता कभी जब, डर से सभी भयभीत होते
हजारों करके आशंका है, धीरज सभी खोते।
दुल्हनों और दूल्हों को, ये लगते हैं बड़े प्यारे
युवाओं और युवती की, स्वप्न आँखों के हैं तारे
मिलनी की यामिनी इनको, दिलाती याद पूनम की
ये भूले से न भूलें, चुहलबाजी वो बचपन की।
यही सच है कि इनकी, चान्दनी होती नहीं अपनी
है सूरज की कृपा इन पर, किरण देता जिसे अपनी
फिर भी धन्यवाद हम देते, जो माध्यम बनके हैं आते
कुशलता से चमकते नभ में, हैं फिर भी हमें भाते।

मोहन प्रसाद बरनवाल
उखरा-वर्द्धमान

हार ??? कभी नहीं !!!

कभी न मानना तुम हार,
यही है तेरे जीवन का सार।
कोशिश करने में क्या बुराई है,
आखिर मुँह के बल तो सबने चोट खाई है।

आदित्य बरनवाल
चास

Scanned by CamScanner

एक दृढ़ समर्थ सरकार चाहिए

चुनाव एक महान अवसर है, हमारे लोकतंत्र का पवित्र पर्व है।
तो हम चुनें ऐसी सरकार, कि कह सकें हमें अपने लोकतंत्र पर गर्व है।।
जो कोई आए, बहुमत पाए, सचमुच वह भारत भाग्य निर्माता हो।
दृढ़ प्रतिज्ञ कुशल नीतिज्ञ, निर्णायक बुद्धि का जननायक जनत्राता हो।।
जो दल आए, जो समूह बनाए, देश का हित हो सबसे उपर।
एक लक्ष्य हो, एक दृष्टि हो, एक देश का भाव प्रखर।।
क्षुद्र दलों के दलदल से देश बचाओ, बरबादी है, आबादी को लाभ नहीं।
देश मांग रहा क्षुद्र हितों का बलिदान, बहुत हुआ अब और नहीं।।
अवसर पा रहा है, चुनाव संसद का, इसमें चूकना नहीं चाहिए।
भाई भतीजावाद, जातिवाद, परिवारवाद के आगे झुकने नहीं चाहिए।।
राजीव गांधी से बाजपेयी के बीच, दशक तक, कितने सरकारों का राज रहा।
नरसिंह राव को छोड़ कितने दलहीन छुटभैयों के सिर पर ताज रहा।।
देश का क्या भला किया उसने, उनसे कौन से काम हुआ।
अस्थिरता का दौर चल, सच पूछे तो लोकतंत्र का सिस्टम बदनाम हुआ।।
वी.पी. सिंह ने मंडल चलाया, चन्द्रशेखर देश का सोना बाहर गिरवी रख आए।
दलविहीन देवगौड़ा, गुजराल से कांग्रेस ने सपोर्ट खींच ली, औंधे मुँह धड़ाम गिरे।।
भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों में ही बस केवल उनका नाम गिनाया।
आए गए चेहरा चमकाए, राजनीति का वह कालखंड बेकार गया।।
वह इतिहास दुहराना नहीं है, एक मजबूत दल आधारित सरकार लाना है।
चाहे व दल कोई भी हो, उसकी मजबूती और नीयत आजमाना है।।
देशवासियो क्षुद्र स्वार्थ से उपर उठो यदि देश की नैया पार लगाना है।
तो राष्ट्र धर्म पर एक जुट हो जाओ, चुनाव में राष्ट्रीयता का भाव जगाना है।।
जनता जनार्दन के हाथ में है यह, उसको अपना पावर दिखाना है।
एक स्थित दृढ़ सक्षम सरकार बनेगी, देश को महान बनाना है।।

अनन्त नारायण लाल
सेवानिवृत्त उपायुक्त वाणिज्यकर
कस्तूरबा नगर, लूबी सर्कूलर रोड, धनबाद

बधाई

बी.पी.एस.सी. परीक्षा में औरंगाबाद की श्रेया कश्यप ने तीसरा स्थान हासिल किया है। श्रेया ने बताया कि उसने पहले प्रयास में ही सफलता पाई है। श्रेया ने औरंगाबाद से ही डीएवी स्कूल में 10वीं और फिर बोकारो से 12वीं के बाद बी.आई.टी मेसरा से इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। उसके बाद बी.पी.एस.सी. की परीक्षा में शामिल हुई। उनके पिता विकास कश्यप औरंगाबाद में ही LIC में डेवलपमेंट ऑफिसर हैं। उनकी माँ शशिबाला कश्यप और पूरा परिवार यहीं रहते हैं। श्रेया डा. दिनेश कुमार, कटिहार के साले हैं। श्रेयाजी को फूफा की ओर से बहुत–बहुत बधाई। आगे भी वे सफलता प्राप्त करते रहे, शुभकामना के साथ।

डा. दिनेश कुमार
Retd.CMO, कटिहार

Scanned by CamScanner

उपन्यास

बेचैन जिन्दगी

भाग – 14

प्रिय पाठको !

इस उपन्यास के भाग 13 में आपने देखा होगा कि त्रिभुवन बाबू ने पत्नी सोनमती देवी के कटुता एवं उपेक्षापूर्ण व्यवहार से ऊब कर सदा–सदा के लिए अपना मकान छोड़ दिया। पर चलते समय उन्होंने हैण्डनोट बनाकर मकान का उत्तराधिकारी श्रीमती जी को जो दे आए उसी का अनुचित लाभ छोटी बेटी सविता और दामाद श्यामसुन्दर ने लेने का षड्यंत्र रचा। भले ही इसमें उन्हें कामयाबी नहीं मिली, पर सोनमती जी को भिखारिन बन जाना पड़ा। मकान बिक्री का भेद खुल जाने पर त्रिभुवन जी के दोनों बेटों ने तेजी से कड़ा रुख जो अपनाये, उसी का फल यह हुआ कि मकान बिक्री से बच गया, पर बेटी–दामाद ने सदा–सदा के लिए श्रीमती जी को अपने पास से धकेल कर बाहर कर दिया। उधर त्रिभुवन बाबू को लेकर जिस दिन से उनके साले की बेटी निर्मला अपना घर ले आयी उसी दिन से उसके घर की काया पलट होने लगी। घर की आर्थिक स्थिति सुधरने लगी और गरीबी भाग गई। पर त्रिभुवन बाबू का आन्तरिक हृदय बेचैन रहने लगा जिसे निर्मला ने अपने सद्व्यवहार से उनके बोझिल मन को नियंत्रण में रखा। इसके बाद क्या हुआ, देखते जाइए।

गाँव में प्राइवेट बैंक के खुल जाने से सबसे अधिक लाभ निर्मला के बड़े बेटे विनोद ने उठाया। इसमें उसकी तत्पराता तो कम त्रिभुवन बाबू का योगदान सर्वाधिक रहा। बैंक में विनोद के नाम से पासबुक खुलवाने के बाद उनके मन में एक शंका जगी। उन्हें लगा कि भविष्य में विनोद जो कुछ कमायगा वह तो अपने नाम से खाते में जमा करता चला जाएगा। कहीं ऐसा न हो कि वह स्वार्थी बन जाय और माँ निर्मला की उपेक्षा न करने लगे। अतः उन्होंने दूसरे दिन विनोद को बुलाकर कहा – ''विनोद ! आज तुम माँ के साथ फोटो ग्राफी करा लो। कल तो बिना फोटो और पहचान के तुम्हारा खाता खुल गया। तुम्हारे साथ माँ का भी नाम रहेगा और तुम्हारी कमाई के साथ–साथ माँ की बचत के भी पैसे हर महिने जमा होते जायेंगे। इससे खाते में अधिक धन जमा होने से कभी आफत–विपत्ति में या लोन लेने में सुविधा होगी। मैं पीछे से बैंक आ रहा हूँ। मैनेजर से मिलकर पूरा काम करवा दूँगा। विनोद नानाजी की चालाकी समझ नहीं सका और फौरन तैयार हो गया। उन्होंने सारा काम छोड़कर निर्मला को भी विनोद के साथ जाने का परामर्श दे दिया और किनारे ले जाकर सारी बात गुपचुप तरीके से समझा दी। फूफाजी की तार्किक बात निर्मला को समझ में आ गयी। बारह बजते–बजते बैंक में खाते में माँ बेटे दोनों के नाम दर्ज हो गए। उस दिन निर्मला ने भी आत्म संतोष के लिए सौ रुपये जमा कर दिए। दोनों को वापस भेजकर त्रिभुवन साहू कुछ देर के लिए बैंक में रुक गये और अवसर पाकर मैनेजर साहब से मिलकर पहले तो अपना पूरा परिचय दिया। फिर बात छेड़ते हुए कहा – ''सर ! अगर आपके बैंक में फोर्थग्रेड के कर्मचारी का कोई पद खाली हो तो मेरे उस लड़के को आप रख लीजिए। बेचारा बहुत गरीब परिवार का है। इसके पिता का बहुत पहले ही देहान्त हो चुका है। एक तरह से मानिए कि मैं ही उसका अभिभावक हूँ। लड़का बहुत अधिक तो पढ़ा–लिखा नहीं है। मात्र सेकेण्ड डिविजन से मैट्रिककुलेट है और उम्र भी लगभग बीस वर्षकी है।'' पूरी बात सुनने के बाद मैनेजर साहब बोले – ''कल आप इस लड़के को मेरे पास लेते आइए। मैं उसका पूरा–पूरा साक्षात्कार लूँगा। अगर वह जँच गया तो उसके आवेदन पत्र को अग्रसारित कर मुख्यालय को भेज दूँगा। तब तक नियमित रुप से उसे ऑनररी बेसिस पर बैंक में काम लूंगा। जैसे ही मुख्यालय से आदेश आएगा, उसकी नियुक्ति कर ली जाएगी। अभी किसी भी प्रकार का कोई लिखित आदेश नहीं मिलेगा। और हाँ, बातें बिल्कुल गोपनीय रहनी चाहिए। ऐसा न हो कि काम भी न बने और शोरगुल हो जाय।'' पूरा आश्वासन के बाद त्रिभुवन बाबू लौट आए। दूसरे दिन वे पुनः विनोद को लेकर बैंक चले गए। कुछ मौखिक तो कुछ लिखित जाँच के बाद मैनेजर साहब ने स्वीकृति दे दी। साथ ही

Scanned by CamScanner

यह भी कहा कि इसका काम बैंक में सिर्फ स्टाफ लोगों को पानी-चाय पिलाना, साफ़ों को पंक्तिबद्ध खड़ा रखवाना, गाँव-गाँव आ-जाकर खाताधारियों को लाना और खाता खुलवाना और जरुरत पड़े तो फॉर्म आदि भरने में खाताधारियों की मदद करना होगा। कोई पूछे तो यही कहना है कि मैं केवल काम सीख रहा हूँ। अधिक बातें किसी से नहीं करनी है। स्टाफ जो भी आदेश दें, उनकी भी बात माननी है। न नुकुर नहीं करना है। जहाँ समस्या हो, परामर्श लेकर ही काम करना है। मनमानी नहीं करनी है। फिर उससे एक फॉर्म पर हस्ताक्षर कराकर उसका फोटो चिपकवाकर अग्रसारित करके मैनेजरसाहब ने उसे त्रिभुवन साहू को वापस कर दिया और लेकर दूसरे ही दिन मुख्यालय जाने को कह दिया।

समय जब पटरी पर आने का रहता है तो मनुष्य जिस काम में हाथ डालता है, उसी में उसे सफलता मिलती चली जाती है। ऐसे तो पुरुषार्थी काल की गति पर विश्वास नहीं करते है, फिर भी दुनिया में बहुत सारे लोग हैं जो भाग्य को बड़ा बलवान मानते हैं। निर्मला के दुर्भाग्य के दिन लद चुके थे और उसके भाग्य ने पलटा खाया था। पति के देहान्त के बाद उसकी जिन्दगी अंधेरे में चली गई थी। अपने साथ-साथ बच्चों के पेट की चिन्ता उसे खायी जा रही थी। पर अपने नेक स्वभाव और सेवा भाव ने ही उसके भाग्य को बदल डाला। त्रिभुवन बाबू दूसरे ही दिन विनोद को लेकर बैंक मुख्यालय जा पहुँचे और महाप्रबंधक से जा मिले। घण्टे भर के लगभग दोनों में बातें होती रहीं। राम सलाम तो हुआ ही, पता नहीं युगानूकूल कुछ लेन-देन की भी शायद बात हुई होगी,.मैं ठीक-ठीक कहने में असमर्थ हूं। इसके बाद पन्द्रह दिनों तक इन्तजार के बाद नियुक्ति पत्र मिल जाने का आश्वासन और बीच में एक बार पुनः मिलने की बात कहकर चले जाने का आदेश दिया। दूसरे सप्ताह पुनः त्रिभुवन बाबू महाप्रबंधक से मिले और साथ में नियुक्ति पत्र भी लेते आए। बिल्कुल अस्थायी रुप में विनोद की नियुक्ति हुई थी। फिर भरोसेमंद बनकर उसने बैंक में योगदन किया। इसके एवज में उसे सवा लाख का सिक्युरिटी मनी जमा करना पड़ा। इस तरह लगभग दस हजार रुपये के पाने पर उसकी बहाली सम्भव हो गई। यह रहस्य सिर्फ त्रिभुवन बाबू, विनोद और निर्मला तक ही सीमित रहा।

कहा जाता है कि दीवार के भी कान होते हैं। प्रतिदिन उसे बैंक जाते और कुछ काम करते गाँव वालों की नजरसे यह बच नहीं सका। लोग कुरेद-कुरेद कर उसे पूछने लगे – "प्रतिदिन बैंक जाते हो। तेरी नौकरी हो गई क्या। चेहरे पर बड़ी रौनक दिखाई दे रही है। बोली बात, चाल-ढाल, पहनावा आदि में भी बदलाव आ गया है। इस पर विनोद रहस्य छुपाते हुए कहता – चाचा, भैया, बाबू लोग ! भला मुझे गरीब को नौकरी कौन देगा ? मैं तो बैंक का एजेन्ट बना हूँ। खाताधारियों को लाना, उनका खाता खुलवाना, जमा-निकासी में मदद करता हूँ। साथ ही एल.आई.सी का भी काम करने लगा हूँ। इसके लिए गाँव-गाँव, घर-घर का चक्कर लगाना पड़ता है। लोगों की खुशामद करनी पड़ती है, समझाना पड़ता है, तब कहीं लोग बैंक में खाता खुलवाते हैं। सचमुच इस तरह का काम उसे कई महीने तक करना पड़ा। बड़े भोर उठकर वह हल-बैल धरकर कुछ जोतन कोड़न या पटवन का काम करता। फिर जल्दी-जल्दी दो-चार कौर ठूँसकर साइकिल से किसी गाँव को छूते हुए बैंक भागता। ग्रामीण महिला-पुरुषों को खाता खुलवाने के लिए प्रेरित करता। शाम को पाँच बजे छुट्टी होती तो राम-राम कहकर घर पहुँचता। सुबह का छूटा हुआ काम घर पर निपटाता। उसकी इस तरह की मेहनत से बैंक में उसका साख भी जम गया और खाताधारियों की संख्या में भी इजाफा हुआ। दूसरे महीने से उसके खाते में वेतन जमा होने लगा जिसे वह माँ और नानाजी को जानकारी देते हुए चापे रखता। इधर उसकी माँ निर्मला घर के उपजे साक-सब्जी को खाने-पीने के बाद जो बच जाता उसे ग्रामीण बाजार में बेच लाती। इससे जो बचत होती वह विनोद को थमाकर बैंक में जमा करवा देती। त्रिभुवन बाबू की अब सिर्फ एक ही चिन्ता रहती कि वह प्रत्येक माह की पहली तारीख को बैंक जाते और महीना भर के राशन-पानी या अन्यान्य खर्च के लिए पैसे निकाल लाते। शेष रकम वहीं बैंक में ही छोड़ देते। बाल-बच्चे तो साथ में थे नहीं, इसलिए उन्होंने

Scanned by CamScanner

तमाम तरह की जमा राशि में नोमिनी निर्मला को ही बनाकर रख छोड़ा। जिन्दगी का क्या भरोसा, कभी भी कुछ हो जा सकता है। ऐसे में जमा रकम का उत्तराधिकारी भी तो किसी को होना चाहिए। इस बात से भी निर्मला और विनोद वाकिफ थे। अतः वे उनकी सेवा में और मन लगाने लगे। कभी-कभी रात को विनोद उनका शरीर दबा देता तो वे निहाल हो जाते। कहा भी गया है- ''अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन, चत्वारितस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं।'' विनोद और निर्मला के लिए यह दृष्टान्त बिल्कुल सटीक बैठ रहा था।

फिर भी विनोद की नौकरी का रहस्य छुपा नहीं रहा। उसके परिवार के किसी सदस्य से तो नहीं, पर बैंक के ही एक स्टाफ ने उसके ही गाँव के एक युवक को उसकी नियुक्ति का रहस्य खोल दिया। फिर क्या था, दूसरे ही दिन दो-चार बेरोजगार युवक बैंक जा धमके और उसकी नियुक्ति पर आपत्ति जताने लगे। इस पर मैनेजर साहब ने उन्हें टका-सा जवाब दे दिया - '' मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। जो हेड क्वार्टर का आदेश आया है, मैंने उसी का अनुपालन किया है। अतः आपलोगों को जो आपत्ति जतानी है, हेड क्वार्टर में जाकर जताइये। ज्यादा शोरगुल कीजिएगा तो मैं थाने में रिपोर्ट कर दूँगा।'' इसके बाद वे वहाँ से सरक गये। पर इतना से ही वे नहीं रुके और राँची चले गए। वहाँ भी वही रोवाब वे गाने लगे तो महाप्रबंधक ने आँखें तरेरी और साफ-साफ कह दिया कि यह प्राइवेट क. का बैंक है। ऑल इण्डिया बेसिस पर इसकी नियुक्ति दिल्ली से होती है। इसलिए आप सभी दिल्ली जाइए और पता कीजिए कि विनोद साहू की नियुक्ति कब और कैसे हुई है ? मैं सही-सही बताने में बिल्कुल असमर्थ हूं। अब बेचारे क्या करें ? टका-सा मुँह लेकर वापस आ गए। भला किसी के पेट पर लात मारने के लिए दिल्ली की दौड़ कौन लगाताहै ? उधर कुछ दिन के बाद विनोद ने अपना रहस्य कुछ छुपाते हुए खोला - ''दिल्ली से ही एक पेपर में आजसे दो महीने पूर्व एक वेकेन्सी निकली थी। मैंने गोपनीय ढंग से उसमें आवेदन पत्र डाल दिया था। कुछ दौड़-धूप और एक नेता की पैरवी के बल पर मेरी अस्थायी रुप से नियुक्ति हो गई है। आगे भगवान जाने। सुनकर बेचारे लोग अवाक रह गये। पर बैंक भी स्थायी हो गया और विनोद की नौकरी भी। बिल में घुसे साँप पर लाठी पीटने से भला क्या साँप मर सकता है ? विनोद की नौकरी का भी यही हाल हुआ। गाँव के युवक ताकते रह गये और त्रिभुवन बाबू की बुद्धि और कार्य कुशलता से वह बैंक के फोर्थग्रेड का कर्मचारी स्थायी रुप से हो गया। मछली एक ओर मल्लाह चार-चार। जब तक वे जाल फेंकते, मछली छलक कर निकल चुकी थी। चारों हाथ मलते रह गए। जिसके भाग्य में था,अपने ही गाँव में नौकरी पा ली। विनोद की जिन्दगी यहीं से बदलनी शुरु हो गई।

जिस दिन से नियुक्ति पत्र विनोद को मिला था उसी दिन से त्रिभुवन बाबू उसके बैंक का रोज हाल-चाल लेते - यह सोचकर कि लड़कपन में लड़का कोई भूल न कर बैठे। पहले ही दिन उन्होंने उसे नौकरी की पहली शिक्षा दी - ''बेटे ! सरकारी हो या प्राइवेट, नौकरी पाना आसमान का तारा तोड़ने के समान आज के युग में हो गया है। तुम तीन बात का हमेशा ध्यान रखना। वह है Three 'C' अर्थात पहला 'C' का मतलब Character या चाल-चलन, दूसरा 'C' का अर्थ होता है Crime अर्थात अपराध और तीसरा 'C' का अर्थ होता है Cash अर्थात रकम का लेन-देन। ख्याल रखना किसी के साथ कोई विवाद या मारपीट न हो और न ही अपने चरित्र पर किसी प्रकार का दोष लगने देना। कभी-कभी बैंक तेरे ऊपर भरोसा कर लाख-दो लाख रुपये गिनने या कैश ऑफिस से निकालने या कैस काउन्टर में भूल वश पैसे छूट सकते हैं या फिर किसी खाताधारी का ही पैसा बैंक में गिर जा सकता है। ऐसे में अपनी ओर से एक पैसे को भी इधर-उधर नहीं होने देना। समाज में हर तरह के लोग होते हैं। यहाँ इन्सान एक है तो हैवान सौ। ऐसे में बत्तीस दाँत के बीच जिह्वा के समान रहकर जिन्दा रहना पड़ता है। अपने से ऊपर के बाबू या अफसर को सदा राम सलाम और इज्जत करना। कोई भी आदेश को न नहीं कहना। विनम्र होकर नौकरी करने में भलाई है। ऐंठ या इतराकर चलने का मतलब खतरे में जाना है। जो बात समझ में न आवे वह अपने से सीनीयर से पूछ लिया

Scanned by CamScanner

जाता है। विभाग के साथ सदा वफादारी निभाना, कभी विश्वासघात करने की चेष्टा नहीं करना। नौकरी इसी का नाम है। जिसने निवाह दिया, समझो वह सिकन्दर हो गया।'' विनोद सुन सुनकर हाँ–हाँ करता, कभी प्रतिकार नहीं करता। इसी तरह दो वर्ष गुजर गए, किसी से उसके प्रति कोई शिकायत सुनने को नहीं मिली। एक बात और महत्वपूर्ण ढंग से जता दी, वह थी – कम खाना, गम खाना और गम खाना। चाल चलन चालीस साल और दशा दस साल। दशा की दुर्दशा कभी भी हो सकती है, पर चाल–चलन ठीक रखने से जिन्दगी आराम से गुजर जाती है। इसलिए हमेशा ऊपर–नीचे, आगे–पीछे सोचकर चलना और खतरे को हमेशा भाँपते रहने की कोशिश करना। यही मेरी अंतिम सीख है। सुनकर विनोद ने सारी बातें गाँठ में बाँध ली।

अब कुछ बातें त्रिभुवन बाबू के व्यक्तिगत जीवन संबंधी जानिए। आपको ख्याल होगा इसी उपन्यास के एक स्थल पर मैंने इस बात की भी चर्चा की थी कि त्रिभुवन बाबू का परिचय पेंशन पाने के क्रम में बैंक में ही एक सेवृत्त प्रधानाध्यापक मिश्रा जी से हुआ था जो सत्संगी थे और समय–समय पर सत्संग में जाया करते थे। उन्हीं की प्रेरणा से बीच–बीच में त्रिभुवन बाबू उनके साथ सत्संग में चले जाते थे। इससे उनका मन भी बहल जाता था और मन का विकार और चिन्ताएँ भी कुछ क्षण के लिए हवा हो जाती थी। तुलसीदास ने ठीक ही कहा है – ''बिनु सत्संग विवेक न होइ। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।'' यह पद उनके लिए बिल्कुल सटीक बैठा। अब आस–पास जहाँ कहीं सत्संग होता वे अवश्य उसमें भाग लेते और तर्क संगत बातों को मन में उतारने की कोशिश करते। उन्हीं मिश्रा जी की प्रेरणा से उन्होंने दीक्षा भी ले ली। अब उनका रुटिन नियमित रुप से एक जैसा हो गया। वो प्रतिदिन ब्रह्म मुहुर्त में जगते, श्री श्री ठाकुर महाराज के श्री चरणों में इष्टनृति निवेदन अर्पण करते, इष्टनाम जाप करते, सुबह–शाम प्रार्थना करते, पूजा–पाठ पूर्ववत् नियमित रुप से करते लेकिन अभी तक निर्मला के घर उन्होंने सत्संग नहीं करवाया था जिसका मलाल उन्हें सता रहा था। उसके घर पर तो लगभग सारी सुविधायें हो ही गई थी। बिजली के आ जाने से उसने घर की छत पर पानी सिनटेक्स टैंक बैठवाकर जगह–जगह नल की व्यवस्था करवा दी, शौचालय पहले से था ही। घर पर मोटर लगा देने से पानी ऊपर टैंक में चढ़ाने में सुविधा हो गई। इस तरह पानी की सुविधा हो जाने से सब काम काज समय पर हो जाने लगा। उसी पानी से बिना लटठा कुण्ड चलाये साग–सब्जी भी घर पर उपजायी जाने लगी। घर पर दूध का अभाव था, जिस कमी की पूर्ति एक गाय खरीद कर पूरी कर दी। इस तरह निर्मला को घर से काम से इतनी फूर्सत ही न मिले कि कभी बैठकर रहने का अवसर हो। जो भी हो उसके परिवार का समयबड़े आराम से निश्चिंतता से बीत रहा था।

विनोद की नौकरी के दो वर्ष बाद समय ने नया मोड़ लिया। कुछ लोग ग्रह चक्र का भी दोष बताते हैं। ऐसी मान्यता है कि शनि के दुष्प्रभाव से बड़े–बड़े राजे–महाराजे भी नहीं बच पाये, सामान्य मनुष्य कौन कहे ! शायद कुछ इसी तरह की बात त्रिभुवन बाबू के साथ घटित हुई होगी, लकीर खींच कर कहना मेरे लिए असंभव है। पर इतना तो सब कोई जानता है कि सदा रहे नहीं एक समाना। त्रिभुवन बाबू का यह निर्वासित जीवन शायद अंतिम मोड़ पर पहुँच चुका था अब कोई नया गुल खिलाने वाला था। वह समय बिन बुलाये आगामी दो वर्ष के अन्दर आ गया। तब तक क्या हुआ जानिए –

लगभग चार बजे का समय था। त्रिभुवन बाबू किसी जगह के सत्संग से लौट कर आँगन में कदम रख ही रहे थे कि उन्होंने देखा कि विनोद की बहन जो उससे छोटी थी और जिसका नाम उर्मिला था, बड़े गौर से आँगन में दीवार से लटकाये शीशे में अपना चेहरा झाँक रही थी। यह लड़की लगभग अठ्ठारह की हो गई थी। पढ़ने–लिखने में तेज तर्रार नहीं थी, पर घरेलू काम में दक्ष हो रही थी। दो वर्ष पूर्व उसने बहुत मुश्किल से थर्ड डिवीजन से मैट्रिक पास किया था। इसके बाद त्रिभुवन बाबू के परामर्श से ही वह घर के काम–काज में माँ को हाथ बँटा रही थी। इन दो वर्षो में वह घर में लिपाई–पुताई, चुल्हा–चक्की का काम सीख गई थी। पहले लकड़ी और उपले पर खाना पकता था,

Scanned by CamScanner

पर जब से गैस का प्रचलन आ गया, गाँव में भी लोग आराम तलबी होने लग गये। महिलाओं को चूल्हा फूँकने से राहत मिल गई थी और कम परिश्रम में गरम-गरम खाना मिलने लगा। इन्हीं सब सुविधाओं के कारण निर्मला बेटी को गृह कार्य का भार सौंपकर निश्चिंत हो गई। अकसर घरेलू काम उर्मिला ही करती और निर्मला पशुओं को संभालती तथा खेती-बारी की देखभाल करती। उर्मिला उसकी सहायिका बन चुकी थी और गृह-कार्य में निपुणता हासिल कर रही थी। आज जब वह फूर्सत पाकर बन सँवर रही थी तो त्रिभुवन बाबू की नजर उस पर पड़ी। उर्मिला उन्हें देख नहीं पायी। उन्हें अनुभव ऐसा हुआ कि उर्मिला अब सयानी हो गई और इसे अब पर घर विदा किया जा सकता है। उम्र के साथ-साथ उसके चेहरे और शरीर पर उभार आ रहे थे। गाँवों में प्रायः लोग अठ्ठारह-बीस के अन्दर ही बेटियों की विदाई की बात सोचने लगते हैं। उर्मिला को देखकर वो पीछे हट गए और कुछ देर सोचने के बाद उन्हें एक युक्ति नजर आयी। विनोद अब बीस-बाइस का हो ही चुका था। उसकी हल्की-हल्की दाढ़ी मूँछें निकल आयी थीं। इस समय निर्मला की बारी में प्याज, लहसुन, साग-बैगन, सेम आदि लगे हुए थे। जेदुआ भींडी, करैला, खीरा वगैरह जनम कर बढ़ रहे थे। निर्मला कुछ निकौनी का काम कर रही थी और टंकी के पानी से क्यारियों को पटा रही थी। त्रिभुवन बाबू धीरे-धीरे चलकर उसी के पास जा पहुँचे। फूफाजी को पास आते देख निर्मला को बड़ी खुशी हुई साथ ही उत्सुकता भी हुई कि आज क्या बात है कि इस ढलती बेला में फूफाजी उसके पास बड़े प्रसन्न मुद्रा में आ खड़े हुए हैं। जरुर कोई प्रसन्नता की बात है, वह मन ही मन सोचकर चुप लगाये रही।

क्रमशः जारी .....

शेष अगले अंक में।

डॉ. भुवनेश्वर मोदी
मोदी भवन, ब्लॉक मोड़,
पतरातू, जिला – रामगढ़

स्वार्थ भरी दुनिया

स्वार्थ भरी इस दुनिया में
कोई किसी का नहीं होता है
क्या इंसा क्या जानवर में
कोई फर्क नहीं दिखता है
स्वार्थ भरी इस दुनिया के
कोई किसी का नहीं होता है
सभी लिप्त है इस दलदल में
किसी को कुछ नहीं दिखता है
क्या छोटा और क्या बड़ा है
एक दुजे को लुटता है
स्वार्थ भरी इस दुनिया में
कोई किसी का नहीं होता है
भगवान बनाया इंसा को
इंसा खुद को क्या समझ बैठा
स्वार्थ में अंधा इंसा को
भगवान भी नहीं दिखता है
स्वार्थ भरी इस दुनिया में
कोई किसी का नहीं होता है।

विनोद कुमार बरनवाल, राज ग्राउण्ड, झरिया

चुटकूले

पप्पू : कल मैंने रॉकेट छोड़ा तो वह सीधा सूरज से जा टकराया।
अप्पू : क्या बात कर रहा है ? फिर क्या हुआ ?
पप्पू : फिर क्या ? मेरी पिटाई हुई .....
अप्पू ?: किसने मारा ?
पप्पू : सूरज की मम्मी ने .....।।

.....

पप्पू की माँ : बेटा तुझे यहाँ से पटना जाने में 1 दिन लगा और वापस आने में 3 दिन लगे वो भी नई कार से ऐसा क्यों ?
पप्पू : माँ ! ये कार बनाने वाले भी पागल हैं, आगे जाने के लिये 4 गियर बनाये हैं और वापस आने के लिये केवल 1 ही रिवर्स गियर बनाया है।

Scanned by CamScanner

Mob. : 9386565377
8709894478 (W)

ॐ

बरनवाल भवन न्यास, पटना

बरनवाल भवन, विन्ध्यवासिनी पथ, कदमकुआँ, पटना–3

13वीं आमसभा सह चुनाव की सूचना

न्यासी सं० : ..... दिनांक-7 अप्रैल 2019, रविवार दिनांक : 20-02-2019

सम्मानित न्यासी श्री/श्रीमती .....

प्रिय महोदय/महोदया

दिनांक 17 फरवरी 2019 की कार्यकारिणी बैठक के निर्णयानुसार 'बरनवाल भवन न्यास, पटना' की तेरहवीं आमसभा एवं चुनाव की तिथि 07 अप्रैल 2019 (रविवार) को निर्धारित की गई है। दिनांक 07 अप्रैल 2019 दिन रविवार को पूर्वाह्न 10.00 बजे बरनवाल भवन के सभागार में निर्धारित समय पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

कार्यक्रम

1. 10:00 –दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण एवं स्वागत भाषण
2. 10:30 – बारहवीं आमसभा कार्यवाही की सम्पुष्टि
3. 11:00 – सचिव का प्रतिवेदन
4. 11:30 –कोषाध्यक्ष द्वारा अंकेक्षित आय-व्यय का प्रस्तुतीकरण
5. 12:00 – न्यासियों के विचार।
6. 01:30 – अध्यक्षीय भाषण व आमसभा का समापन।
7. 02:00 – भोजनावकाश।
8. 02:30 –ग्यारह कार्यकारिणी सदस्य, तदोपरान्त पदाधिकारियों हेतु चुनाव प्रक्रिया प्रारंभ।

मतदान हेतु निर्देश

(क) एक व्यक्ति सिर्फ और सिर्फ एक ही मत का प्रयोग करेंगे।

(ख) न्यासी की अनुपस्थिति में सिर्फ उनके पुत्र/पुत्री/पति/पत्नी/माता/पिता/भाई/बहन में से कोई एक ही मताधिकार का प्रयोग करेंगे।

(ग) प्रत्येक न्यासी को अपना 'न्यासी कार्ड'' या फोटोयुक्त पहचान पत्र' लाना अनिवार्य है।

(घ) न्यासी के बदले मताधिकार का प्रयोग करने वाले बंधु को अपना व न्यासी दोनों का ऐसा परिचय पत्र लाना आवश्यक है जिससे उनका आपसी संबंध सत्यापित हो सके।

(ङ) कार्यकारिणी सदस्य चुनाव में भाग लेने के इच्छुक न्यासी, कृप्या संलग्न आवेदन प्रपत्र को विधिवत् भरकर कार्यालय में दिनांक 20 मार्च 2019 से 31 मार्च 2019 संध्या 7 बजे तक अवश्य जमा करें।

(च) अगर कोई न्यासी स्थायी तौर पर अपना उत्तरदायित्व अपने उत्तराधिकारी पुत्र /पुत्री को सौंपना चाहते हैं, तो वे इस आशय का घोषणा पत्र दिनांक 19 मार्च 2019 तक बरनवाल भवन के कार्यालय में अवश्य जमा कर दें।

नोट : 1. कृप्या आमसभा चुनाव की सूचना अपने स्तर से अन्य न्यासियों को भी दें।
2. पत्राचार/दूरभाष परिवर्तन व उत्तराधिकारी की सूचना अवश्य दें।

–: चुनाव पदाधिकारी :–

अम्बिका प्रसाद
मो.-93867 64399

अशोक कुमार बरनवाल
मो.-98527 72972

प्रो० (डॉ.) योगेन्द्र प्रसाद
(मो.-9471410487)

Scanned by CamScanner

प्रेरक कथा

ध्रुव

ध्रुव तारा किसने नहीं देखा ? यह गहन वन में यात्रियों और समुद्र में नाविकों का मार्गदर्शन करता है।

इस तारे को लेकर भी अपने यहां एक पौराणिक कथा है।

राजा उत्तानपाद

प्राचीन काल में राजाओं की अनेक रानियां होती थी। राजघरानों में उन दिनों यह परम्परा ही थी। ये रानियां एक दूसरे से ईर्ष्या करती थी। कौन पटरानी बनेगी व भविष्य में किसका पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी होगा, इन बातों को लेकर उनमें आपस में मनमुटाव होता था।

उत्तानपाद नाम का एक राजा प्राचीनकाल में हो गया। उसकी दो रानियां थी। बड़ी का नाम सुनीति और छोटी का नाम सुरुचि था। राजा को छोटी रानी सुरुचि अधिक प्रिय थी। उसके मुख से निकले प्रत्येक शब्द को वे कानून मानकर उसका पालन करते थे। सुरुचि अधीर प्रकृति की थी तथा छोटी-छोटी बातों पर ही कुपित हो जाती थी। वह अपने सुख और ठाटबाट को अधिक महत्व देती थी। अत्यंत प्रेम करने के कारण राजा भी उचित-अनुचित का विचार किये बिना ही उसकी सभी बातों को स्वीकार कर लेते थे। उसके गलत कार्य का प्रतिकार करने का साहस उनमें नहीं था।

सुनीति विनम्र, सुसभ्य और अच्छे स्वभाव की थी। वह योग्य-अयोग्य, उचित-अनुचित आदि का विचार करके ही काम करती थी। उसका निर्णय हमेशा सही रहता था। वह स्वभाव से धीर, गंभीर थी। सुरुचि के उद्धत व्यवहार के सामने वह अपने आपको असमर्थ समझती थी। राजा सुरुचि के हाथ की कठपुतली थे, इसलिये पटरानी का दर्जा सुनीति के बजाय सुरुचि को दिया गया था। राज्य के सभी कार्यो की बागडोर उसके हाथों में थी।

Scanned by CamScanner

सुनीति का एक पुत्र था। नाम था ध्रुव और सुरुचि का भी एक पुत्र था। नाम था उत्तम।

ध्रुव महल में नहीं रह सकता

सुरुचि सिर्फ अपनी शान-शौकत एवं शक्ति के प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं थी, उसकी इच्छा थी कि उसका पुत्र उत्तम राज्य का उत्तराधिकारी बने, इसलिये वह ध्रुव व सुनीति को महल में नहीं रहने देती थी। उसे इस बात का डर था कि यदि वे महल में रहेंगे तो राज्य की प्रजा यह कभी नहीं भूलेगी कि सुनीति बड़ी रानी होने के कारण उसका पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी होगा, बड़ी रानी होते हुए भी सुनीति को राज्य में शहर के बाहर रहकर साधारण लोगों की तरह जीवन व्यतीत करना पड़ता था। राजा उत्तानपाद ने उसका कभी विचार नहीं किया। वे कभी उसके घर नहीं जाते थे। वे सुरुचि से अत्यंत प्रेम करते थे और उससे डरते भी थे।

सब आराम दूसरों के लिये

इन सारे कष्टों के रहते हुए भी सुनीति वास्तव में अपने नाम को चरितार्थ करती थी। सुनीति का अर्थ है गुणवती। वह अपने पति की कभी शिकायत नहीं करती थी। उसने कभी सुरुचि को भी दोष नहीं दिया। वह हमेशा उनका कल्याण सोचती थी। अपने भाग्य को उसने सहर्ष स्वीकार लिया था। अपने दुख दर्द उसने ईश्वर को अर्पित कर दिये थे और वह हमेशा शांत रहती थी। ध्रुव को ऋषि-मुनियों, संतों की कहानियां सुनाया करती थी। इस तरह वह अपने दुखों को भूलने का प्रयत्न करती थी। वह ईश्वर से ध्रुव की प्रगति और उन्नति के लिये प्रार्थना करती थी। ध्रुव ही उसके दुखों को दूर करने वाला व सांत्वना प्रदान करनेवाला एकमात्र सहारा था। ध्रुव अपनी मां से अत्यंत प्रेम करता था। वह ईश्वर भक्त था व बड़ों का आदर करता था। यद्यपि वह छोटा था परन्तु वह सब से अच्छा व्यवहार करता था। अपनी मां से उसने ईश्वर की भक्ति में लीन होना सीखा। प्रतिदिन उसकी ईश्वर भक्ति की भावना बढ़ती जाती थी।

एक बार उसके मन में विचार आया कि "मेरे पिता राजा है पर मैं और मेरी मां महल में क्यों नहीं रहते ? पिताजी घर क्यों नहीं आते ?" उसने बार-बार अपनी मां से यह प्रश्न पूछा परन्तु वह उसे बहलाकर उसके प्रश्न को टाल देती थी।

हर एक छोटा बालक चाहता है कि उसके माता-पिता उससे प्यार करें। क्या यह सच है न ? ध्रुव को मां का प्रेम मिला था। वह उसे स्नेहपूर्वक ऋषि-मुनियों की कहानियां सुनाकर उसमें अच्छे संस्कार उत्पन्न करती थी। पर ध्रुव को पितृप्रेम नहीं मिला था। पिता का प्रेम पाने की उसके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई।

पिताजी मुझे अपनी गोद में उठाओ न

एक दिन ध्रुव खेलते-खेलते महल में चला गया। उस समय वह पांच वर्ष का था। राजा सुरुचि और उत्तम के साथ रत्न-जड़ित सिंहासन पर बैठे थे। वह कक्ष रत्नों की अपूर्व चमक से जगमगा रहा था। महल की प्रत्येक वस्तु आंखों को आनंद प्रदान कर रही थी। सुनहरे सिंहासन, रजत मूर्तियां एवं श्वेत गद्दियों से सुसज्जित थी। महल की संगमरमरी दीवारों पर तराशी हुई चांदी की मूर्तियां लगी थी। ध्रुव ने महल में प्रवेश किया। उसने उत्तम को पिता की गोद में बैठे देखा। यह देखकर उसे भी पिता की गोद में बैठने की इच्छा हुई। उसने सिंहासन की तरफ पैर बढ़ाये। सुरुचि ने ध्रुव को पिता की ओर बढ़ते देखा। यकायक उसका मन दुष्टता से भर गया। ध्रुव ने सिंहासन की सीढ़ी चढ़कर पिता के पास आकर कहा "पिताजी मैं भी आपकी गोद में बैठना चाहता हूँ। मुझे भी गोद में लीजिये न।"

क्या तुम इस योग्य हो ?

राजा ने ध्रुव की ओर देखा तक नहीं। बेचारा ध्रुव उत्तम की तरह पिता की गोद में बैठने के लिये मचल रहा था। उसने पिता की गोद पर हाथ रखा। सुरुचि की आँखों से क्रोध की चिंगारियां बरसने लगीं। राजा ने भी उसे ध्रुव की ओर गुस्से से देखते हुए देखा। यह देखकर उनके मन में बालक के लिये दया की भावना उत्पन्न हुई। एक तरफ उनके मन में पुत्र के प्रति स्वाभाविक प्रेम उत्पन्न हुआ तो दूसरी तरफ उन्होंने अपनी प्रिय रानी को ध्रुव पर सिंहिनी की तरह गुर्राते देखा। उनमें उसके गुस्से का सामना करने की शक्ति नहीं थी, इसलिये वह शांत रहे। सुरुचि का गुस्सा उसके वश में नहीं रहा। वह बच्चे

Scanned by CamScanner

पर भड़क उठी। "ऐ लड़के, तुमने राजा की गोद में बैठने की कामना कैसे की ? तुम मेरे पुत्र बनकर नहीं जन्मे। क्या तुम राजगद्दी को पूने के अधिकारी भी हो ? यदि तुम राजगद्दी प्राप्त करने के इच्छुक हो तो तपस्या करो, ईश्वर से प्रार्थना करो और मेरी कोख से जन्म लो। तभी तुम उत्तम के समान पिता की गोद के अधिकारी हो सकते हो। निकल जाओ यहां से। नहीं तो तुम्हें बाहर निकाल दिया जायेगा। निकलो बाहर," उसने घृणापूर्वक कहा।

वापस मां की ओर

बेचारा बालक। चकित होकर वह पिता की ओर देखने लगा परन्तु उन्होंने उसकी ओर देखा तक नहीं। ध्रुव को अत्यंत दुख हुआ। वह घायल सांप की तरह क्रोधित हुआ। उसने गहन अपमान का अनुभव किया। उसके पिता उसका अपमान होने पर भी चुप रहे। एक शब्द भी नहीं बोले। उसके गालों पर आंसू बहने लगे। वह सिंहासन की सीढ़ियों से उतर पड़ा। एक दासी ने उसको रोते-सिसकते देखा। वह भी बहुत दुखी हुई। वह उसे गोद में उठाने के लिये आगे आयी। परन्तु ध्रुव उसे ठेलकर आगे बढ़ चला। दासी ने उसका पीछा किया। अपने लड़के को इस भांति आते हुए देखकर सुनीति को लगा जैसे आकाश गिर पड़ा हो। उसने ध्रुव को हमेशा हँसते देखा था। परन्तु उसको रोते देखकर वह उसकी ओर दौड़ी। उसने उसे गले लगाकर गोद में उठा लिया। उसका मुंह चूम लिया और शान्त करने का प्रयत्न करने लगी। वह दासी उसका पीछा करती आ रही थी। सुनीति ने उससे पूछा, "बालक क्यों रो रहा है ? क्या तुम जानती हो ?" दासी ने पूरी घटना का वर्णन कर दिया।

यही ईश्वरेच्छा है

सुरुचि द्वारा ध्रुव के अपमान की कहानी सुनकर सुनीति को अत्यंत मानसिक कष्ट हुए। ध्रुव सुरुचि के कारण अपने पिता के पास भी जा नहीं सका। इस व्यवहार से सुनीति का मन दुखी हो गया। थोड़ी देर तक उसके मुख से शब्द ही नहीं निकल सके। वह शांत बैठी रही। उसके मन में हलचल हुयी। वह सोचने लगी। राजगद्दी के वास्तविक हकदार के साथ सुरुचि ने ऐसा अपमान जनक व्यवहार क्यों किया ? ध्रुव कितना मासूम भोला-भाला बालक है। उसके साथ ऐसा अपमान जनक व्यवहार क्यों हुआ ? सुनीति ने सोचा कि पटरानी का पद मैं प्राप्त नहीं कर सकी और एक साधारण नागरिक की तरह जीवन व्यतीत कर रही हूँ। तो क्या सुरुचि मेरे बच्चे से भी बदला लेना चाहती है ?

सुनीति ने अपने उमड़े हुए आंसुओं को पी लिया और बालक को शांत करने का प्रयत्न करने लगी। उसने कहा "बेटा निस्संदेह तुम राजकुमार हो। पर राजकुमार की हैसियत से रहने का भाग्य लेकर तुम नहीं जन्मे। जब ईश्वर हम पर दया करेगा तब हमारी हालत सुधरेगी। मैं अभागी औरत हूँ और तुम मेरे पुत्र हो, इसलिए दुख पा रहे हो। यही ईश्वरेच्छा है, यह मानकर चलें। हम तो केवल उसकी शरण में जाकर उनसे क्षमा मांगकर उनसे अपनी कठिनाइयों को दूर करवाने की कामना कर सकते हैं। कौन दूसरा हमारी मदद करेगा ? निश्चित रहो, सब ईश्वर की इच्छा पर ही निर्भर है।"

मैं ईश्वर का दर्शन कैसे कर सकता हूँ ?

प्रतिदिन मां ध्रुव को ईश्वर-भक्ति-संबंधी कहानियां सुनाया करती थी। बालक ने कहानियों से जाना था कि कैसे ईश्वर अपने भक्तों के कष्टों को दूर करते हैं। मां हमेशा स्पष्ट कहती थी कि कष्टों में रहनेवालों की शरण ईश्वर ही है और उनसे ही कष्टों को दूर करने की उनको शक्ति मिलती है। ईश्वर दया का सागर है। मां के ऐसे शब्द बालक को याद आये और वह प्रसन्न हो गया। उसके हृदय में आशा की लहर उत्पन्न हुई। "मां ! मैं ईश्वर को कैसे देख सकता हूँ ? उससे प्रार्थना करने पर क्या वह सामने उपस्थित नहीं होगा ?" सुनीति ने कहा, "मेरे बच्चे। हमें हमेशा उसी का चिन्तन व प्रार्थना करते रहना चाहिये। वह दया का सागर है निश्चित ही वह हमारी मदद करेगा।"

ध्रुव ने कहा, "पर हम उसका दर्शन कैसे कर सकेंगे ? मैं उसे देखूंगा, उसे अपने दुख बताकर उसकी मदद लेने का प्रयत्न करुंगा।"

मुझे ईश्वर का दर्शन करने की आज्ञा दो

सुनीति बालक के शब्दों को सुनकर दयनीय ढंग से मुस्कुरायी। उसने कहा, "मेरे प्यारे बच्चे ऐसी कोई

Scanned by CamScanner

जगह नहीं है जहां पर ईश्वर का निवास न हो वह अलग-अलग रूपों में सभी जगह उपस्थित है। वह सभी मानवों में रहता है। वह अच्छे-बुरे, सुख-दुख सब में निवास करता है। वह मन की पवित्र भक्ति से प्रसन्न होता है। पर उसके दर्शन पाना सरल नहीं है। मेरे बेटे, अपना मन स्थिर रखो और भक्ति में पूर्ण विश्वास करो।''

''पर मां, तुमने बताया था कि ऋषि-मुनि ईश्वर को पाने के लिये, उनका दर्शन करने के लिये वनों में जाते हैं। क्या वह वहां भी उपस्थित है'' हां मेरे प्यारे बेटे वह सब जगह है। पर ध्रुव, वन में तपस्या करना सरल नहीं है। वन सिंह, शेर जैसे भयानक पशुओं से भरा है। वहां सांप, बिच्छू जैसे विषैले जन्तु रहते हैं। वहां के फल-फूल ही ऋषि-मुनियों का भोजन होता है। वहां वर्षा, गर्मी और सर्दी सब सहन करनी पड़ती है। तुम्हारे जैसा छोटा बालक, मेरे प्यारे बेटे, ऐसा नहीं कर सकता। पर ध्रुव के भोले-भाले चेहरे पर दृढ़ता का भाव झलकने लगा।

''मां मैं वन में जाऊँगा और ईश्वर का दर्शन करुंगा। मैं उन्हें भक्ति से प्रसन्न करुंगा और उनसे वरदान मांगूंगा। मुझे आशीर्वाद दो ताकि मैं अपने कार्य में सफल बनूं।'' यह कह कर उसने आदर से मां के चरणों को स्पर्श किया।

बेटे यह मार्ग बड़ा कठिन है, सरल नहीं है

ध्रुव के ये शब्द सुनीति के हृदय को छू गये। उसने कभी विचार भी नहीं किया था कि ध्रुव इस प्रकार का निर्णय लेगा। क्या छोटा बालक वन में जायेगा ? क्या छोटा बालक तपस्या में लीन होगा। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। पर उसने अपने मन की तैयारी कर ली। उसने प्रेमपूर्वक कहा ''ईश्वर दर्शन करना सरल नहीं है। उसे प्रसन्न करने के लिए एकाग्रचित होने की आवश्यकता है। तुम्हें उसमें अडिग निष्ठा रखनी पड़ेगी तुम्हें अपना हृदय भक्तिरस में मग्न करना पड़ेगा। यह सब एक छोटे बालक की सीमा के परे है। इसलिए सुख और दुख जो हमारे भाग्य में होगा, हमें स्वीकारना पड़ेगा। सुख-दुख ईश्वर का उपहार समझकर ग्रहण करो एवं फिर उसे ही अर्पित कर दो। एकमात्र यही मार्ग हमारे लिए शेष है।''

इतना कहकर सुनीति ने बालक को गोद में उठा लिया।

मैं अवश्य ईश्वर का दर्शन करुंगा

पर बालक ध्रुव के हृदय में ईश्वर के दर्शन की तीव्र भावना उत्पन्न हो गयी थी। कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े, उसने ईश्वर का दर्शन करने का दृढ़ विचार कर लिया था। वह अपने और अपनी मां के दुखों को ईश्वर के सम्मुख रखना चाहता था। वह अपनी मां की गोद से उठ खड़ा हुआ ''मां ! मैं अब देर नहीं कर सकता। कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े, मैं ईश्वर का अवश्य दर्शन करुंगा। मेरे लौटने तक तुम धैर्य रखना। ऋषि-मुनियों ने जब उनका दर्शन किया है तो क्या वे मुझे दर्शन नहीं देंगे ? मुझे आशीर्वाद दो ताकि मैं उन तक पहुँच सकूं।'' इतना कहकर उसने अपनी मां के चरणों को फिर से स्पर्श किया। अपने बेटे के शब्दों को सुनकर सुनीति को सुरुचि के कहे शब्द याद आये कि ''तुम मेरे पुत्र बनकर नहीं जन्मे। तुम राज गद्दी कैसे पाओगे ?'' उसे ऐसा अनुभव हुआ कि ध्रुव ने उसके इस अपमानजनक व्यवहार को अपने हृदय से हटाने के लिए उपयुक्त मार्ग चुना है। उसने ध्रुव से कहा, ''मेरे बेटे तुम्हारी सौतेली मां ने जो तुम्हारा अपमान किया है, वह इसलिए कि तुम्हारे पिता मुझे अपनी पत्नी समझने में भी शर्म का अनुभव करते हैं। सुरुचि को दोष देना बेकार है। ईश्वर की प्रार्थना करना ही तुम्हारे लिए उपयुक्त है। एकाग्रचित्त से उसकी भक्ति करो। तुम्हें सफलता मिलेगी।''

ध्रुव ने अपनी मां को झुककर फिर से प्रणाम करना चाहा कि उसने उसे अपनी गोद में उठा लिया और प्यार किया। उसे आशीर्वाद दिया। पांच वर्ष के छोटे बालक ने ईश्वर का दर्शन करने का निश्चय कर लिया।

एकमात्र ईश्वर के दर्शन का ध्येय लेकर वह चल पड़ा। पत्थरों, कांटों की परवाह न करते हुए ऊबड़- खाबड़ मार्ग से चलता हुआ भूख-प्यास और थकान की चिन्ता से परे ईश्वर के नाम का अपने होठों से उच्चारण करता हुआ, ईश्वर भक्ति के रस से अभिभूत होकर चलता रहा।

वन में

विश्राम किये बिना, निरंतर चलते हुए ध्रुव एक घने जंगल में पहुंचा। चलते-चलते मार्ग में अनेक

Scanned by CamScanner

कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उसके छोटे कोमल पैर कंटीली झाड़ियों और कंकड़ों से लहु-लुहान हो गये। वह भूखा-प्यासा, थका-हारा पूरा दिन चलता रहा। जंगल में भयानक आवाजें आ रही थी। हाथी चिंघाड़ रहे थे। सिंह, शेर गुर्रा रहे थे पर ध्रुव उनसे बेखबर चलता रहा। भगवान नारायण का चिंतन करते हुए आगे बढ़ता जा रहा था। परमात्मा का नाम ही उसका एकमात्र आधार था। अंधेरा छा गया था। घने जंगल में उसे रास्ता नहीं सूझ रहा था। आगे चलने में असमर्थ होकर थक से तिलमिलाता हुआ वह एक वृक्ष के नीचे गिर पड़ा। उस अवस्था में भी उसके होठों से भगवद्नाम का ही उच्चारण हो रहा था। थका-हारा छोटा बालक शीघ्र ही सो गया। रात बीती। सूर्योदय हुआ। चहचहाते पक्षी अपने घोसलों से निकल पड़े। सांप-बिच्छू आदि विषैले जन्तुओं ने उसे सूखे पत्तों पर सोते हुए देखा। हिरनों ने ध्रुव के पास जाकर सूंघा। एक जानवर के आने से दूसरे जानवर और पक्षी भी आकर्षित होकर बालक के चारों ओर इकट्ठे हो गये। उनकी आवाजों को सुनकर बालक ध्रुव जाग उठा। आंखें खोलकर उसने चारों ओर देखा। सबेरा हो गया यह जानकर वह उठ खड़ा हुआ। उसके जागने से पक्षी और जानवर डरकर भाग खड़े हुए।

पूजनीय गुरुदेव मेरा मार्गदर्शन करिए

भगवान नारायण के नाम का उच्चारण उसके होंठ निरंतर करते रहे। उसे विश्वास था कि वह अवश्य ईश्वर का दर्शन कर सकेगा। ईश्वर के दर्शन की तीव्र इच्छा ही उसे जंगल में लायी थी। शीघ्र ही उसने आगे की यात्रा प्रारम्भ कर ली। उसके घायल कोमल पैरों से पहले से ही रक्त बह रहा था। आगे चलने में उसे बड़ी कठिनाई हो रही थी।

उसी समय नारद अचानक वहां उपस्थित हुए। वे भगवान नारायण के परम भक्त थे। वे तीनों लोकों में भ्रमण करते थे। हाथ में तम्बूरा लिए और मंजीरे लिये नारायण के नाम का गान करते हुए नारद को आते देखकर ध्रुव को अत्यंत आनंद हुआ। वह उनके चरणों का स्पर्श करने के लिए नीचे झुक गया। अपनी दिव्य दृष्टि से नारद मुनि ने ध्रुव की सभी बातें जान ली। उन्होंने बालक को उठाया। ध्रुव ने कहा, "गुरुदेव मैं ईश्वर के दर्शन के लिए वहां आया हूँ। आप आकर मुझे वे कैसे दर्शन करूं।"

नारद ने उसकी पीठ थपथपाकर प्रेम से कहा, "तुम अभी छोटे बालक हो। ईश्वर के दर्शन की तीव्र इच्छा ने तुम्हें इस घने जंगल में लाकर खतरे में डाल दिया है। तुमने इतना कठिन कार्य किया है।" नारद मुनि का स्पर्श पाकर ध्रुव नयी चेतना से भर गया। अब घर जाओ।

ध्रुव ने अपने साथ घटी घटना का विस्तार से वर्णन किया कि कैसे उसकी सौतेली मां ने उसका अपमान किया और कैसे पिता ने उसकी ओर दुर्लक्ष्य किया तथा मां ने उसे कैसी सलाह दी। ध्रुव को गले लगा कर नारद बोले, "प्यारे बच्चे, तुम्हारे माता-पिता वास्तव में भाग्यवान हैं। ईश्वर का दर्शन पाने की तुम्हारी उत्कट इच्छा ने मुझे आनन्दित किया है। पर बच्चे, ईश्वर को देखना सरल नहीं है। ऋषि-मुनियों ने अनेक जन्मों तक तपस्या की पर अभी तक वे ईश्वर का दर्शन नहीं कर सके। भूखे-प्यासे रहकर तुम ईश्वर का दर्शन नहीं कर सकते। आज तुम ईश्वर का दर्शन इसलिए करना चाहते हो, क्योंकि तुम्हारा मन दुखी है। वही मनुष्य ईश्वर दर्शन कर सकता है जो दुख और सुख से अलिप्त हो अर्थात उन्हें समान मानकर चले। सौतेली मां के तानों से बिंधकर अब तुम अपने मन को ढाढ़स देने के लिए ईश्वर को ढूंढ रहे हो। जिसे ईश्वर के दर्शन की लालसा होती है उसे इच्छाओं, आकांक्षाओं और क्रोध का त्याग करना पड़ता है। देखो ! तुम यहाँ इसलिए आये हो न क्योंकि तुम्हारी सौतेली मां ने तुम्हारा अपमान किया है। उसके तानों से तुम्हारा मन क्रोध से भर गया। तुम बुद्धिमान रहते तो तुम्हारी सौतेली मां के तानों को सुनकर भी शांत रहते। मन की स्थिरता और शांती के बिना तुम ईश्वर के दर्शन कैसे कर सकोगे ? सांसारिक जीवन का अनुभव और बुद्धि की परिपक्वता आने पर ही तुम ईश्वर का दर्शन कर सकोगे इस समय तुम वापस जाओ। जैसे संसार में दूसरे लोग रहते है, वैसे ही रहो। दुख-सुख का अनुभव लो। जब वृद्ध हो जाओ तो वन में आकर तपस्या करो और उस समय ही तुम ईश्वर का

Scanned by CamScanner

दर्शन कर सकोगे। यद्यपि ध्रुव छोटा था। फिर भी इन शब्दों ने उस पर कोई प्रभाव नहीं डाला। उसने कहा, ''गुरुदेव मैं क्षत्रिय वंश का हूँ। आपकी सलाह मेरे निर्णय को बदल नहीं सकती। मैं यहां ईश्वर के दर्शन हेतु आया हूं। मेरा मार्गदर्शन करके मुझे आशीर्वाद दीजिये। मेरी मां ने मुझे बताया कि वनों में तपस्या करने वाले ऋषि-मुनियों को ईश्वर का दर्शन होता है। मां कहती थी कि ईश्वर अपने भक्तों की देखभाल स्वयं करता है। अब मैं राज्य पाने का इच्छुक नहीं हूं। मैं वह पद पाना चाहता हूँ जिसे अभी तक मेरे पूर्वजों ने नहीं पाया। गुरुदेव मेरा मार्गदर्शन करिये।'' उसने झुककर उनके चरणों को स्पर्श किया।

बालक के साहस और विश्वास को देखकर नारद मुनि प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, ''देखो मेरे बच्चे, तुम्हें याद है तुम्हारी मां ने क्या कहा था ? वही अच्छी सलाह है।

''सब कुछ भूलकर ईश्वर की प्रार्थना करो। यमुना नदी के किनारे मधुवन नाम का एक स्थान है, वहां जाकर नदी में स्नान कर पवित्र मन से ईश्वर का चिन्तन करो। उसकी प्रतिमा अपने हृदय में स्थिर कर लो। उसका चेहरा छोटे बालक की तरह कोमल और प्यारा है। उसका भोलाभाला चेहरा चमक से दीप्तिमान है। उसका रुप सबको अपनी ओर आकर्षित करने वाला व प्रकाश से परिपूर्ण है। यह प्रतिमा अपने मन में स्थिर कर लो। इस प्रतिमा को आधार बनाकर तुम प्रार्थना-चिन्तन करो। अपने मन को वश में रखो। जिससे वह इधर उधर कहीं भटके नहीं। ईश्वर सच्ची भक्ति से प्रसन्न होंगे। ईश्वर करे तुम्हें सफलता मिले।'' मुनि ने उसे भगवान वासुदेव (नारायण) का पवित्र मंत्र सिखाया और आशीर्वाद दिया।

मुनि का आशीर्वाद पाकर ध्रुव का हृदय आनन्द से भर गया। वह अपनी थकावट भूल गया। ईश्वर के दर्शन की तीव्र कामना से भरकर नारद के चरणों को स्पर्श कर वह मधुवन की ओर चल पड़ा।

मैंने गलती की

ध्रुव का मार्गदर्शन कर के महामुनि नारद राजा उत्तानपाद के महल की ओर चल पड़े। सुरुचि ने जब ध्रुव का अपमान किया था उस समय तो राजा उसके डर से शांत रहे पर वे उसके आंसुओं को नहीं भुला पाये थे। उन्होंने ध्रुव को लाने के लिए अपना सेवक भेजा था। उससे उन्हें पता लगा कि बालक ध्रुव ईश्वर का दर्शन पाने के लिए जंगल में चला गया है। इस समाचार से राजा का हृदय दुख से भर गया। जब नारद मुनि ने महल में प्रवेश किया, उस समय राजा अपने दुष्कृत्य का पश्चाताप कर रहे थे। सभी सुरुचि को दोष दे रहे थे। अभिमानी सुरुचि अब लज्जावश किसी को अपना मुंह तक नहीं दिखा पा रही थी। वह विनम्रता की मूर्ति बनकर एक कोने में दुबक कर बैठी रहती। पुत्र के चले जाने पर सुनीति ने खाना-पीना छोड़ दिया था। वह कमजोर हो गयी थी। नारद उत्तानपाद के राज दरबार में पहुंचे। राजा ने आदरपूर्वक उनका स्वागत सत्कार किया और उन्हें बैठने के लिए आसन दिया। नारद ने पूछा, ''महाराज आप दुखी दिखायी दे रहे है। क्या कारण है ?'' राजा ने उत्तर दिया, ''मुनिवर सुरुचि के प्रेम में पड़कर अपने प्यारे पुत्र और उसकी मां का परित्याग कर मैंने दुर्भाग्यवश बहुत बड़ी गलती की है। ध्रुव अपनी मां के साथ प्रसन्न था, मैंने उसका अपमान किया जिसे वह सहन नहीं कर सका और वह वन में चला गया। मैं पापी हूं।'' यह कह कर राजा दुख से व्याकुल हो गया।

इसका परिणाम अच्छा होगा

नारद मुनि ने राजा को ढाढ़स बंधाया, ''महाराज, तुम्हारा लड़का ध्रुव सब लड़कों से निराला है। ईश्वर स्वयं उसकी रक्षा कर रहे हैं। अपने मन को स्थिर रखकर ईश्वर भक्ति से ध्रुव ऐसा उच्च स्थान प्राप्त करेगा जिसे अब तक कोई नहीं पा सका। धैर्य धारण करो। पश्चाताप से भर कर उत्तानपाद ने कहा, ''आदरणीय गुरुवेदव ! मैंने बिना सोचे समझे मदान्ध बन कर सौ-सौ पाप किये हैं। मुझे क्षमा कीजिए।'' यह कहकर वे मुनि के चरणों में गिर पड़े। तब नारद मुनि ने राजा को सांत्वना देकर कहा, ''ओह ! राजा तुमने जो गलती की है उसका परिणाम अच्छा होगा। अपनी पत्नी सुनीति को महल में लाकर उससे आदरपूर्वक व्यवहार

Scanned by CamScanner

करो।'' इतना कहकर मुनि ईश्वर के गुणों का गान करते हुए वहां से चले गये।

ध्रुव ! उठो !

ईश्वर की दिव्य प्रतिमा को अपने हृदय से स्थिर कर, भगवान नारायण के पवित्र नाम का स्मरण कर ध्रुव स्थिर भक्ति में संलग्न रहा। भूख–प्यास, ठंड–गर्मी सबकी सुध–बुध खोकर, अपने चारों ओर के वातावरण से बेखबर वह भगवान नारायण नारायण के मंत्रों का जप करता रहा। इस तरह दिन, महीने बीतते चले गये। ध्रुव की तपस्या कठिन से कठिनतर होती गयी। दयालु भगवान की जो मूर्ति उसने अपने मन में स्थिर कर ली थी, वह उसी में ध्यानमग्न रहा। महीनों बीत गये। प्रारंभ में उसे जो फल–फूल मिलते थे, उनसे वह अपना पेट भरता था। धीरे–धीरे उसे भूख–प्यास की सुधि न रही। उसका तन–मन भक्तिरस से सराबोर हो गया। कठोर तप के कारण उसके चारों ओर दिव्य प्रकाश का घेरा बन गया। उस प्रकाश से भयभीत होकर जंगल के जानवर वहाँ से भाग खड़े हुए। ध्रुव के तप की दिव्य दाह से तीनों लोक हाहाकार करने लगे।

भगवान नारायण ध्रुव की भक्ति और तप से प्रसन्न हुए। वे ध्रुव के सम्मुख अपनी दिव्य किरणों के आलोक को फैलाते हुए प्रकट हुए। एक हाथ में शंख, दूसरे में चक्र और तीसरे में गदा लिये हुए अपने दिव्य हाथ को ध्रुव के सिर पर रखकर उन्होंने कहा, ''ध्रुव उठो ! मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। ध्रुव ने अपनी आँखें खोली, उसकी भूख–प्यास का त्याग, राजपाट का त्याग, कठिन तपस्या सफल हुए, क्योंकि साक्षात् दयालु भगवान मुस्कुराते हुए उसके पास खड़े थे।

आनंद से ध्रुव कांपने लगा था। आश्चर्य और आनंद से अभिभूत होकर वह अपनी वाचा खो बैठा था। उसने भगवान के अलौकिक चरण–कमल में साष्टांग नमस्कार किया।

भगवान के दिव्य मंगलमय रुप को ध्यान से देखकर उस छवि को अपने नेत्रों में आत्मसात कर लिया। ईश्वर के गुणों का गान करने के लिये वह अत्यंत उत्सुक था। पर आनंद के अतिरेक से विह्वल होकर उसके होंठ भगवान के मंत्रों का उच्चारण नहीं कर पा रहे थे। भगवान ने प्रेमपूर्वक उसके गालों को थपथपाया, उस अलौकिक स्पर्श से वह बोलने में समर्थ हुआ।

आपने मुझे अपना भक्त मान लिया

ध्रुव ने आनंदपूर्वक कृतज्ञता से भगवान की स्तुति की, ''परमेश्वर मैं आपकी महानता का वर्णन नहीं कर सकता। आपके हृदय में उदारता का झरना प्रवाहित होता है। सृष्टि के प्रत्येक निर्माण में आप ही का वास है। बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी आपको समझ नहीं

Gram - Gupta
☎ (06274) 222050 (S)
GUPTA TEXTILES
Wholesale Cloth Merchant
Behind Bohra Market
Marwari Bazar, Samastipur - 848 101
(Bihar)
Prop : Indradeo Gupta
3/16

Scanned by CamScanner

सकते। फिर मैं तो एक छोटा सा बालक हूं।'' उसने प्रार्थना की, ''जिस तरह गाय अपने नवजात बछड़े की रक्षा करती है, उसी तरह आप मेरी रक्षा कर मुझे अपनी शरण में ले लें।'' वन में आने के पूर्व तो ईश्वर के दर्शन की तीव्र ललक थी। पर ईश्वर साक्षात सम्मुख उपस्थित होने पर उसे यह समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे उनकी स्तुति करे। उसने ईश्वर को सरलता से कहा, ''भगवान, आपका दर्शन करने के लिये ही मैंने तपस्या की, पर अब आपके दर्शन के बाद मुझे यह नहीं समझ में आ रहा कि कैसे मैं आपका पूजन और सत्कार करूं। आप अपने भक्तों में मुझे सर्वोच्च स्थान प्रदान कीजिये। बस, मुझे कुछ नहीं चाहिये।'' बालक के इन शब्दों को सुनकर भगवान आनन्दित हुए। उसे फिर से गले लगाकर भगवान ने कहा, ''मेरे बच्चे तुम्हारी सभी इच्छाएं पूरी होंगी। अब अपने राज्य में लौट जाओ। उचित उम्र में राजा बनकर अपने राज्य का शासन करो। प्रत्येक व्यक्ति में अपनी उपस्थिति का अनुभव करके उनका आदर सम्मान करो। उनके सुख–दुख बांट कर उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति करो। धर्म का पालन करते हुए शासन करो। फिर तारांगण के संसार में पहुंच कर उच्च पद प्राप्त करो। ऐसा पद अभी तक किसी ने नहीं पाया।'' बालक को आशीर्वाद देकर भगवान अन्तर्धान हो गये। ईश्वर के अन्तर्धान होने पर ध्रुव जलरहित मछली की तरह तड़पने लगा। वह सोचने लगा, ''क्या मैंने सचमुच भगवान का दर्शन किया ? मैंने कोई गलती तो नहीं की ? मैंने उनके पास अपने आपको अर्पित करने की कामना क्यों नहीं की ? हे भगवान ! फिर से मुझे इन सांसारिक प्रपंचों में फंसना पड़ेगा। उसका हृदय दुख से भर गया। ईश्वर से अपने को एकाकार करने की कामना मुझे करनी चाहिये थी। मैंने यह न करते हुए कितनी तुच्छ मांग की। मैं उस व्यक्ति की तरह हूँ जो राजा के पास जाकर केवल एक मुट्ठी चावल की मांग करता है। इस तरह थोड़े समय तक उसका मन दुखी हुआ। पर फिर वह एकाग्र मन से सोचने लगा कि क्या स्वयं परमेश्वर ने मुझे वापस राज्य में जाकर शासन करने की आज्ञा नहीं दी ? उसका मन इस तरह तर्क–वितर्क करता रहा। अब फिर उसके मन में मां को देखने की कामना हुई। ईश्वरआज्ञा शिरोधार्य कर वह अपने राज्य की ओर चल पड़ा। मां की याद आते ही उसे विचार आया कि उसे उसके बिछुड़ने पर कितना दुख हुआ होगा। पर फिर ईश्वर के दर्शन के क्षणों की याद ने उसके शरीर में शक्ति, आनन्द और उत्साह भर दिया।

वापस महल की ओर

राजा उत्तानपाद ने जब सुना कि ध्रुव ने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर ली है और अब वह वापस अपने राज्य में आ रहा है, तो वे उसे देखने को उत्सुक हो उठे। वे प्रसन्न होकर अपने मंत्रियों, राज्य के गणमान्य लोगों के साथ ध्रुव की अगुवानी करने के लिये मंगल वाद्यों के साथ चल पड़े। ध्रुव को देखते ही उन्होंने उसे प्रेमपूर्वक गले लगा लिया। तब ध्रुव ने आदरपूर्वक अपनी सौतेली मां सुरुचि के चरणों का स्पर्श किया। उसने उसे ऊपर उठा कर आशीर्वाद दिया। उसकी मां सुनीति के आनन्द की कोई सीमा नहीं रही। दुख के पश्चात आनन्द के अतिरेक ने उसकी वाचा खो दी। उसने उसे अगाढ़ आलिंगन में भर लिया। उत्तानपाद की आज्ञानुसार ध्रुव को सुसज्जित राजसी हाथी पर बिठाकर उसकी शोभायात्रा निकाली गई। उसके दर्शनों को उत्सुक नागरिकों ने शहर को फूलों के गुच्छों और मोतियों की मालाओं से सजाया था। प्रत्येक घर दीपकों के प्रकाश से जगमगा रहा था। स्त्रियाँ रास्ते के दोनों ओर फल और फूलों के थाल सजाकर खड़ी थी। सभी नागरिकों का सम्मान और आशीर्वाद पाकर ध्रुव ने नगर में प्रवेश किया।

राजा ध्रुव

राजा उत्तानपाद ने ध्रुव को उच्च शिक्षा दिलाई। ध्रुव ने सभी कलाओं के क्षेत्र में योग्यता प्राप्त कर ली। जब राजा वृद्ध हुए तब उन्होंने ध्रुव का राज्याभिषेक किया। उनकी इच्छानुसार ध्रुव ने प्रजापति शिमसुमार की पुत्री ब्राह्मी और वायुपुत्री इला से विवाह किया। ध्रुव के राज्याभिषेक के पश्चात राजा उत्तानपाद वन में तपस्या के लिये चले गये। ध्रुव ने मन लगाकर शासन किया। सुरुचि का पुत्र उत्तम ध्रुव का अनुयायी बना।

यक्ष नगरी नष्ट

एक बार ध्रुव का भाई उत्तम शिकार खेलने के लिये निकला। जब वह जंगल में घूम रहा था, तब उसे

Scanned by CamScanner

एक शक्तिशाली यक्ष ने मार डाला। उसकी मां सुरुचि उसके न लौटने पर उसे ढूंढती हुई जंगल में पहुंची। यक्ष ने जंगल में भयानक आग जला रखी थी। सुरुचि उस आग की चपेट में आ गई। ध्रुव ने जब सुना कि उसकी मां सुरुचि और उसके प्यारे भाई उत्तम को यक्ष ने मार डाला है, तो उसे अत्यंत दुख हुआ। यक्ष पर उसे अत्यंत गुस्सा आया। उसने यक्ष से लड़ने की तैयारी प्रारम्भ कर दी। यक्ष के शहर अलकापुरी को उसने जीत लिया। उसने यक्षों को स्वर्ग से नीचे जाने के लिये बाध्य किया। ध्रुव ने यक्ष पर बाण चलाये पर वे भयंकर तूफान आने पर वृक्ष से झड़ने वाले पत्तों की तरह, झड़ जाते थे। यक्षों ने अपनी चमत्कारी शक्ति के करिश्मे दिखाने शुरु कर दिये। उन्होंने चारो ओर अंधेरा कर दिया। भयानक तूफान शुरु हो गया। सांपों और सिंहों ने ध्रुव का पीछा किया। इससे क्रोधित होकर ध्रुव ने अपनी तरकश से भगवान नारायण के मंत्र का उच्चारण कर बाण निकाला और उसे चलाया। सब यक्ष और उनकी पत्नियां और उनके बच्चे मारे गये। अलकापुरी मरघट में बदल गयी।

सिर्फ यही मंजूर करो

ध्रुव मनु के वंश का था। उसके दादा स्वयंभू मनु ने जब देखा कि यक्ष मारे जा रहे है, तब उनका हृदय द्रवित हो गया। ऋषि–मुनियों को साथ लेकर वह ध्रुव के पास गये। उन्होंने उसे बुद्धिमानी से सुमार्ग पर चलने की शिक्षा दी। ध्रुव अपने दादा के चरणों में झुक गया। स्वयंभू मनु ने कहा कि, "ध्रुव, तुम निष्पाप भोलेभाले यक्षों को अकारण मार रहे हो ! किसी एक यक्ष की गलती की सजा सबको देना अनुचित है। तुम इतने क्रोधित मत हो। तुम तो इतने बुद्धिमान हो फिर तुम यह पाप क्यों कर रहे हो ? ईश्वर भक्त कभी क्रोध में आकर ऐसे भयानक कार्य नहीं करते। तुम पवित्र हृदय वाले व्यक्ति हो। फिर तुमने साक्षात ईश्वर का दर्शन किया है। तुम्हें ऐसा दुष्कृत्य नहीं करना चाहिये। गलत कार्य करने वाले व्यक्तियों का भी तुम्हें धैर्यपूर्वक मुकाबला करना चाहिये। तुम्हें अस्त्र–शस्त्रधारियों का धैर्य से, दीन दुखियों का दया से पूर्ण होकर व सभी जीवों के साथ मित्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिये। तुमने यक्षों को मारकर कुबेर की भावनाओं को चोट पहुंचाई है। यक्ष कुबेर के अनुयायी है। अब कुबेर के पास जाकर उससे क्षमायाचना करो व उससे आशीर्वाद प्राप्त करो। उसके दादा स्वयंभू मनु के उपदेशों ने ध्रुव को शांत कर दिया। उसने युद्ध बंद कर दिया। युद्धबंदी के समाचार ने कुबेर को अत्यंत आनन्दित किया अपने वरिष्ठ व्यक्तियों के साथ वह स्वयं ध्रुव से मिलने गया। कुबेर के आते ही ध्रुव ने उसके चरणों का स्पर्श किया और उसका आशीर्वाद प्राप्त किया। कुबेर ध्रुव के विनम्र स्वभाव से अत्यंत प्रभावित हुआ। उसने कहा, "बेटा ध्रुव मैं तुम्हारे गुणों से प्रसन्न हूं। तुमने यक्षों का संहार किया इसलिए मैं तुमसे अप्रसन्न नहीं हूं। तुमने अपने दादा स्वयंभू की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया व अपने क्रोध को वश में कर युद्ध समाप्त कर

09002726608
08348697971

AJIT KUMAR BURNWAL

NEW ALANKAR JEWELLERS
PUCCA BAZAR, ASANSOL - 1
(OPP. HEAD POST OFFICE)
PHONE : 0341 -2309248

JEWEL GARDEN
88, G. T. ROAD
OPP. BAZAR, KOLKATA, ASANSOL - 1
PHONE - 0341 - 2221494

8/19

A House of Exclusive 22 Carat Halmark Showroom

Scanned by CamScanner

दिया है। इसलिये मैं तुमसे प्रसन्न हूं। संसार में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को एक न एक दिन मरना है इसलिये अपनी सौतेली मां और भाई की मृत्यु का दुख मत करो। तुम्हें क्या चाहिये ? मैं तुम्हारी सभी इच्छाओं की पूर्ति कर दूंगा। पर ध्रुव को कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं थी। बाल्यावस्था में ही ईश्वर का दर्शन पाकर उसने अपनी इच्छापूर्ति कर ली थी। अब इस आयु में उसे किस वस्तु की इच्छा हो सकती थी। कुबेर के शब्दों को सुनकर ध्रुव ने विनम्रता से कहा, ''मान्यवर ! अब मुझे किसी भी प्रकार का सांसारिक सुख नहीं चाहिये। बस मुझे आशीर्वाद दीजिये कि जिससे भगवान नारायण के मंगलमय रुप को सदैव अपने हृदय में बनाये रखूं।'' यह कह कर वह कुबेर के चरणों में झुक गया। कुबेर उसकी ईश्वर भक्ति देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, ''अच्छा वैसा ही हो।''

ऐसा इच्छित वर देकर वह अन्तर्धान हो गया।

ध्रुरी तारा

ध्रुव अपनी राजधानी में लौट आया। उसने हमेशा दीन-दुखियों की सहायता की। प्रजा के दुख-सुख को अपना दुख-सुख समझा। ईश्वर के मंगलमय रुप का वह सतत चिन्तन करता रहा। ईश्वर की इच्छा के अनुसार उसने राज्य में शासन किया। जब ध्रुव बूढ़ा हुआ उसने अपने पुत्र का राज्याभिषेक किया। राज्य का त्याग कर उसने पवित्र बद्रिकेदाराश्रम में जाकर ईश्वर भक्ति की और अन्त में इस इहलोक को त्याग कर परलोकवासी हुआ।

बाल्यावस्था में भगवान नारायण से प्राप्त वरदान के अनुसार ध्रुव सभी तारागणों में श्रेष्ठ हुआ और उनका मुकुटमणि बना। वह सम्पूर्ण सृष्टि का केन्द्र बना। इस तरह सृष्टि की धुरी उसने धारण की। उसी दिन से भारतवासी जब भी ध्रुव तारे को देखते हैं, उन्हें बालक ध्रुव की पवित्र भक्ति का ध्यान आ जाता है। इस तरह ध्रुव ने तारा बनकर ईश्वर की सृष्टि में अमरत्व प्राप्त कर लिया। यह कहानी हमारे भारतवर्ष में अत्यंत प्रसिद्ध है।

काकेमानी

आया वसन्त है

बेल पर बबूल पर,
गेंदों के फूल पर
महुआ और बेर पर,
अर्जुन, कनेर पर,
सेमल के पौधों पर,
शीशम करौंधों पर,
बैठा ज्यों सन्त है।
आया वसन्त है।।
पीपल, रसाल पर,
लीची की डाल पर,
वरगद और बाँस पर,
चीड़ अमलतास पर,
बागों में घूमता,
फूलों को चूमता।
नैसर्गिक हरियाली,
लाया अनन्त है।
आया वसन्त है।।
बिहँस पड़ी सरों तब,
मधुमक्खी आई जब।
मन्द पवन डोल गया,
पक्षी एक बोल गया।
छतवन के फूलों से,
महका दिगन्त है।।
आया वसन्त है।।
भौंरों का राग लिये,
अतुलित अनुराग लिये।
कहता है घूम-घूम,
पेड़ों को चूम-चूम।
इनको तुम कादो मत,
डालों को छाँटो मत।
फूलों को खिलने दो,
पत्तों को हिलने दो।
खुशियाँ फिर बरसेंगी,
यह जीवन मन्त्र है।
अद्भुत वसन्त है।।

रामेश्वर प्रसाद वर्णवाल
ग्राम+पो.: पुरैना गोसाई,
चनपटिया (प. चम्पारण)

Scanned by CamScanner

वैवाहिक विज्ञापन के पात्र सम्बन्धी सूचना का अभिभावकगण अपने स्तर से पूरी तरह जांच कर संतुष्ट हो लें – सम्पादक

5/19 **वधू चाहिए**

मनीष कुमार, DOB 1989, 5'10", B.Tech. BPCL में Asstt. Manager के पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित, गोरी एवं सुयोग्य वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुरेन्द्र प्रसाद, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9973059257

4/19 **वधू चाहिए**

Praveen Barnwal, 29, 5'7", fair, slim, Development Officer in L.I.C. (Asansol Divn.) looking for a suitable match (should be educated, fair & ht. 5'3"). Contact : Pramod Burnwal (elder brother) Raniganj (West Bengal) Mob. : 9832797578, 9332985087

6/19 **वधू चाहिए**

शोभित प्रिय, 32, 5' 7'', मांगलिक, स्मार्ट एवं आकर्षक सी.ए. फाइनल में तथा अपना निजी प्रेक्टिस हेतु मंगली, सुन्दर, सुयोग्य एवं शिक्षित वधू चाहिए। पिता श्री विजेन्द्र कुमार, माधोपुर, शेर कोठी, मुँगेर से फोटो बायोडाटा एवं कुण्डली के साथ संपर्क करें। मो. : 7007823317 मुँगेर, 7905335030 (लखनऊ)

3/19 **वधू चाहिए**

अविनाश कुमार, DOB 7.12.1989, 5'8", B.Tech. (Elect.), Sr. Electl. Engr. in Sri Gopi Krishna Infrastructure (P) Ltd., पूर्णिया में कार्यरत हेतु सुन्दर, ग्रेजुएट, गृह कार्य दक्ष वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता सुभाष कुमार बर्णवाल, गुरुदयाल ऑटो पार्टस, चास (बोकारो), मो. : 9031721535, 7903444701

1/21 **वधू चाहिए**

Mukesh Burnwal, S/o Jay Prakash Burnwal, 27, 5' 9", fair, Chartered Accountant presently working as Asstt. Manager (Finance) in Eastern Coalfield Ltd. (ECL), of Kajora Bazar, Durgapur (W.B.), Contact No. : 9932363264

6/19 **वधू चाहिए**

कुमार मितेश, DOB 1990, 6', B.Tech., वर्तमान में Sr. Software Engr., Huawei, Banglore में कार्यरत हेतु सुन्दर, लम्बी (कम से कम 5' 4'') प्रोफेशनल वधू चाहिए। Software Engr. को प्राथमिकता। संपर्क करें : मनोज कुमार बरनवाल, गया, मो. : 9934891201

8/19 **वधू चाहिए**

कुणाल किशोर, 31, 5' 11'', गोरा, स्मार्ट, B.Tech. (Electronics) IIT खड़गपुर, बंगलोर में In-Mobi कं में उच्च पद पर कार्यरत, आकर्षक वेतन हेतु उच्च शिक्षित, लम्बी, गोरी, सुन्दर एवं कार्यरत वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता युगल किशोर, अपर आयुक्त (सेवानिवृत), झारखण्ड सरकार, राँची। मो. : 7461999661, 7461999665

5/19 **वधू चाहिए**

संदीप आनन्द, 33,5' 10'', इन्टर, अपना कपड़े का आसनसोल में व्यवसाय, पिता सुरेश कुमार का इकलौता पुत्र हेतु सुयोग्य शिक्षित, गृह कार्य दक्ष गृहणी वधू चाहिए। संपर्क करें : 9932722978

Scanned by CamScanner

4/19

वधू चाहिए

सुनील कुमार, 3.12.89, 5' 4'', इन्टर, बिजनेशमेन (Wholesale & Retail) बोकारो के कच्चारा नं. 2 (झारखण्ड) हेतु संस्कारी, मेहनती, घरेलू एवं शिक्षित कन्या चाहिए। संपर्क करें : पिता झरी लाल बर्णवाल, मो. : 8271537884, 9110086074

7/19

वधू चाहिए

अमितेन्द्र बर्णवाल, 30, 5'10'', फयेर एवं स्मार्ट, असिस्टेन्ट पेशकार, झारखण्ड कोर्ट में कार्यरत हेतु फेयर, व्यूटीफूल एवं शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता राजेन्द्र प्रसाद बर्णवाल, मुँगेर। मो. : 9016730875, 9835257981

4/19

वधू चाहिए

अंकेश, बी.टेक, 28, 6', गोरा एवं स्मार्ट, भारत सरकार के उपक्रम रेल विकास निगम लि. (RVNL) वर्तमान में पूणे में कार्यरत हेतु प्रोफेशनल वधू चाहिए। संपर्क करें : सत्यनारायण प्रसाद, SAIL बोकारो में कार्यरत। मो. : 9430756921, 9471783531

3/19

वधू चाहिए

Bipin Kumar, 5' 8", DOB 8.1.88, works at Civil Court as administrative officer cum Registrar, posted at Khagaria (Bihar), Home twon being Warisaliganj (Nawada), Bihar, need sushil sunder and educated bride. Contact : 7870808849, 9060217521

4/19

वधू चाहिए

कुमार सौरभ, 29, 5' 10'', स्मार्ट, आकर्षक, बंगलोर में Sr. Software Engr., Siemens कं. में कार्यरत हेतु लम्बी, गोरी, शिक्षित गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता बिन्देश्वरी प्रसाद बरनवाल, हिन्दुस्तान फार्मा ट्रेडर्स, नेताजी रोड, देवघर। मो. : 7903797138, W.A.No. 9431188607

3/19

वधू चाहिए

सचिन कुमार बरनवाल,29, 5' 8'', गोरा, स्मार्ट, MBA, वर्तमान में तीन कम्पनियों का जिला वितरक हेतु सुन्दर, शिक्षित वधू चाहिए। फोटो, बायो डाटा के साथ संपर्क करें : पिता पवन कुमार C/o कैलाश प्रसाद, सोनार पट्टी रोड, नवादा (बिहार) मो. : 9304458829, 8877209588

3/19

वधू चाहिए

शुभम, 30, 5' 10'', MCA (NIT रायपुर) पूणे में Sr. Software Engr. के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित वधू चाहिए। Working को प्राथमिकता। संपर्क करें : अशोक कुमार बरनवाल, पो. नरहन (समस्तीपुर), बिहार, मो. : 9931469697, 9113190882

3/19

वधू चाहिए

प्रियंक कुमार, 27, 6', स्मार्ट, B.Tech., (NIT Surathkal),MBA (IIM, Calcutta) Myntra, Banglore में Finance Manager के पद पर कार्यरत हेतु सुन्दर, सुशील, लम्बी, संस्कारी, गृहकार्य दक्ष Technical Degree प्राप्त वधू चाहिए। कार्यरत को प्राथमिकता। फोटो बायोडाटा, कुण्डली के साथ संपर्क करें : पिता प्रशान्त कुमार बर्णवाल, घनबाद, मो. : 8210356194, 9708582108

4/19

वधू चाहिए

चेतन आनन्द, 29, 5' 9'', गेहुँआ, MBA, running own nursing home in Co-operative Colony, Bokaro & having own house at City Centre, B.S.City के लिये सुन्दर, सुशील, शिक्षित एवं गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए। पिता स्व. ओमप्रकाश Ex-Chargeman of BSL, संपर्क करें : जीजाजी संजीव कुमार बरनवाल, बंगलोर, मो. : 9008244713, चेतन आनन्द, बोकारो मो. : 9431379684

Scanned by CamScanner

8/19

वधू चाहिए

अभिषेक राज, 28, 5'8'', रंग साफ, आकर्षक व्यक्तित्व, B.Tech., पूणे में All States MNC में आकर्षक पैकेज पर कार्यरत, पूणे में अपना 3 BHK फ्लैट हेतु सुन्दर, सुशील एवं प्रोफेशनल वधू चाहिए। पिता जयराज गुप्ता, Retd. SAIL कर्मी, धीरा घास, बोकारो, मो. : 7004528033, 8809920415 एवं 9470569816 पर संपर्क करें।

5/19

वधू चाहिए

रोशन कुमार, 29, 5' 9'', M.Com., B.Ed., स्मार्ट, गोरा, Teacher + अपना कोचिंग इन्स्टीच्यूट, Income 6 लाख प्रतिवर्ष के लिए शिक्षित, सुन्दर वधू चाहिए। संपर्क करें : पिता प्रदीप कुमार, घास (बोकारो), मो. : 9031747366, 8651309022

4/19

वधू चाहिए

अनिक, 33, 5' 9'', B.Sc., B.Ed., M.Ed., अध्यापक पद पर कार्यरत हेतु शिक्षित वधू चाहिए। संपर्क करें – रमेश प्रसाद बरनवाल, निकट सी.एम. ओ. ऑफिस, टी.बी. अस्पताल, हुसैनाबाद, जौनपुर (यू.पी.) 222002, मो. : 7499435716, 8960940469

6/19

वधू चाहिए

Anupam Baranwal, 30, 5' 7", B.Sc., MBA, Assistant Controller in Indian Air Force (Central Govt. Job), 7 Lac/annum, need bride well educated, well natured & beautiful (priority for teaching / nursing career and upresident). Contact father Rakesh Baranwal, 8736833382, 8004710865, Whatsapp 7398962208

3/19

वर चाहिए

वैशाली बरनवाल, 25, 5' 5'', Fair, M.Com., कोलकाता से एवं दुर्गापुर में प्राईवेट जॉब हेतु IAS, IPS, Doctor, Engineer वर चाहिए। संपर्क करें : हरिहर प्रसाद बरनवाल, Business, गुरुद्वारा रोड, ऊखड़ा (बर्दवान), मो. : 9531712363, 8597797785

3/19

वर चाहिए

Kriti Kumari, 27, 5' 3", fair, beautiful, MBA (Finance) IBS Hydrabad, B.E. (Electric & Electronics) presently working as a Sr. Financial Analyst at SG Analytics Pune, is looking for an MBA, CA etc. Contact with biodata and photo to Ashok Kumar (Father), Sheikhpura (Bihar), Mob. 9006587323, 8676016901, E-mail : akrita2311@gmail.com

4/19

वर चाहिए

अपर्णा कुमारी, पुत्री स्व. जयकिशन बरनवाल, फुसरो (बोकारो), 26, 5' 4'', गोरी, मंगली ग्रेजुएट, C.S. LLB. वर्तमान में कं० सेक्रेटरी के पद पर बंगलोर में कार्यरत हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए। संपर्क करें : मौसा लक्ष्मी नारायण, मो. : 9576104164 तथा मामा प्रदीप कुमार, मो. : 9431323745

4/19

वर चाहिए

Alliance invited for Shivangi Kumari, DOB 14.8.1990, fair, beautiful, well educated, M.Com 1st class from DSE (DU) & UGC NET qualified, presently working as Junior Accounts officer at BSNL, Katihar. Looking for a suitable well educated groom preferrably Doctor, Engineer (ONGC, NTPC, NHPC, Rly.) or employed as class 1 or 2 officer in Central Govt. Contact with Bio-data to Shambhunath Shah, Retd. Manager, PNB, Purnia, Mob. : 8789740044, 7667352552

6/19

वर चाहिए

डा. रचना भारती, DOB 27.07.1987, 5' 3'', सुन्दर, गोरी, स्मार्ट, गृहकार्य दक्ष MPT (NEURO) IP university, Delhi में सिनीयर फिजियोथेपिस्ट के पद पर कार्यरत हेतु सुयोग्य व शिक्षित वर चाहिए। संपर्क करें : सुरेन्द्र प्रसाद, स्वस्तिक मेडिकल हॉल, झाझा (बिहार), मो. : 9990167831, 9158927766

Scanned by CamScanner

वर चाहिए

4/19 कुमारी दिव्या, मंगली, 23, 5' 4'', गौरी, इन्टर, इकलौती संतान श्री लक्ष्मी नारायण, आजाद नगर, गोमो (धनबाद), हेतु सुयोग्य एवं संस्कारी शिक्षित वर चाहिए। जो ससुराल पक्ष को अवलम्बन प्रदान कर सके। संपर्क करें : लक्ष्मी नारायण, मो. : 9934546985, 9576104164

6/19 Sristi Baranwal, 24, 5' 5'', फेयर, मांगलिक, PG (MU) कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : पिता बासुदेव प्रसाद, गया,मो0 : 7870530546, 9279061937

3/19 Shilpa Baranwal NM Smart, wheatish, slim, pure vegetarian, 5' 2", DOB 28.2.88/6.50 PM at Pratapgarh (UP), B.Tech. working as Sr. Solution Principal in High Radius at Hyderabad @ 30 LPA, Jeevansathi.com profile ZZWY9074. Contact father Shanker Ram, KV Teacher in Lucknow. Mob. 8808770766, srbaranwal@gmail.com

4/19 सौनी प्रिया बर्णवाल, 5'3'', D.O.B. 10.4.1993, fair, MA English, W.B. Govt. में प्राइमरी शिक्षक एवं पाण्डवेश्वर (प. बर्दवान) में कार्यरत हेतु सुयोग्य वर चाहिए। संपर्क करें : बिनोद कुमार बर्णवाल, मो. : 9475938563

ओल्ड इज गोल्ड

देहाती भाषा में लोग कभी-कभी बोलते है – 'साठा, तब पाठा'। जिसकी आंग्ल भाषा बोली जाती है – 'ओल्ड इज गोल्ड'। जिन लोगों की उम्र साठ से ऊपर हो जाती है उनमें पूर्व समय से अधिक परिपक्वता आ जाती है। क्योंकि समय के थपेड़ों से मँजा व्यक्ति अपने ज्ञान में अधिक विकसित हो जाता है। वह जीवन व समाज के प्रत्येक पहलूओं से पूरी तरह अवगत होता है। यह भी सही है कि सभी व्यक्ति में यह गुण विद्यमान रहता है। क्योंकि शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व घरेलू स्थिति सभी का विभिन्न होता है। जिन लोगों में उक्त बातों में सामंजस नहीं होता है, वे सभी अधूरे परिपक्वता की स्थिति में होते हैं। लेकिन जिन लोगों में उपरोक्त बातों को ध्यान रख सभी पहलूओं का सामंजस कर चलते हैं वे लोग अपने अक्लमंदी के कारण समाज में आदर के दृष्टि से देखे जाते हैं।

लगभग पचास वर्ष के ऊपर के व्यक्तियों में अधिकतर ध्वनि दोष, आँखों में रोशनी की कमी, हृदय रोग व अन्य रोगों से पीड़ित हो जाते हैं। खान-पान के सही तरीका के न रहने के कारण वे सभी दमा, ब्लड प्रेसर, शुगर, और्थाराईटिस आदि के चपेट में आ जाते हैं। जिस कारण उनका स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता जाता है। लेकिन संयमित जीवन से गुजर-बसर करने वाले लोग उपरोक्त रोगों से यथासंभव बचे रहते हैं। वे लोग अपने जीवन को संयमित तथा नियमित तौर-तरीके से जीते रहते हैं। उनमें परिपक्वता की मात्रा अधिक रहती है। जिससे समाज, परिवार, राष्ट्र की गतिविधि तथा अपने कार्यकलाप में उचित ढंग से संतुलन बनाये रखते हैं। उनमें बुद्धिमता में कोई कमी नहीं रहती है। जिसे हम 'ओल्ड इज गोल्ड' से परिभाषित करते हैं।

आज आर्थिक भागमभाग में बहुत से लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरुक नहीं रहते है। जिन लोगों के दैनिक जीवन में तम्बाकूजन्य वस्तुएँ, शराब आदि का खुलकर उपयोग होता है, वे लोग पैंतालिस-पचास के उम्र के बाद अनेक बीमारियों के शिकार बन जाते हैं। क्योंकि वे इन गलत वस्तुओं के आदी होकर भी बढ़ते उम्र में भी इससे परहेज नहीं कर पाते हैं। माँसाहार, चाय-कॉफी, तले हुए वस्तुएँ तथा अधिक नमकीन व मीठे पदार्थ भी शरीर पर गलत असर करता है। लेकिन मुँह के स्वाद के आदत से लोग अपने भोजन विषयक सावधानी का पालन नहीं करते हैं। जो वृद्धावस्था में कई जानलेवा बीमारियों के शिकार बनते जाते हैं।

लेकिन जो लोग प्रारम्भ से ही उपरोक्त खानपान विषयक उपयोग में परहेज करते रहते है अथवा न्यूनतम

Scanned by CamScanner

करते हैं, उनके अधिक उम्र होने पर भी उनलोगों के शरीर पर किसी बीमारी का थोड़ा सा असर पड़ता है। [illegible], तले हुए वस्तुओं का उपयोग प्रत्येक व्यक्ति को सीमित दायरे में करना चाहिए। इस बात का सही ढंग से समझाने वास्ते मैं योगाचार्य मिट्ठन लाल की पुस्तक 'सम्पूर्ण योगासन' तथा रामदेव बाबा के 'प्राणायाम प्रसंग' से कुछ बातें लिख रहा हूँ।

दीर्घायु में थॉमस पार का जीवन एक दृष्टांत मानना चाहिए। जिसमें इस इंगलैंडवासी ने चौदह सौ तिहत्तर ईसवी में जन्म लिया। पहला विवाह अठासी वर्ष की आयु में किया, दूसरा विवाह एक सौ बीस वर्ष के आयु में। एक सौ पैंतालिस वर्ष के आयु में वह दौड़ों में शामिल होने योग्य था। मुसल से अनाज कूट लेता था और सभी प्रकार का श्रम कर लेता था। दिन-रात में केवल दो बार ही खाना लेता, किन्तु वह अत्यन्त सादा होता। लेकिन उन्हें लंदन के दूषित वातावरण में आकर विलासपूर्ण परिवार में रहना पड़ा, जहाँ बढ़िया भोजन और शराब उड़ती थी। इन खान-पान के कारण उसके फेफड़ों में अवरोध पैदा हो गया और वह सोलह सौ पैंतीस ईसवीं में एक सौ बासठ वर्ष उम्र भोगकर मर गया।'

एक फ्रांसीसी अधिकारी का विश्वास है, 'लोग यूँ ही नहीं मरते, वे स्वयं को मारते हैं।' हैनरी जेकिन्स सन् पन्द्रह सौ में यॉर्कशायर (इंग्लैंड) में उत्पन्न हुआ और एक सौ सत्तर वर्ष का होकर मरा। वह मुँह अंधेरे उठता, नास्ते में पहले आधा सेर पानी पीता और अधिकतर ठंडा खाना खाता, वह बड़ा धैर्यवान था।'' इसी तरह कई दृष्टांत दीर्घायु पाये व्यक्ति का 'सम्पूर्ण योगासन' पुस्तक दिया गया है।

शरीर जब बुढ़ापन की ओर बढ़े, लेकिन यदि अच्छे विचारानुसार मस्तिष्क का उपयोग किया जाए, तो उसके शरीर पर विशेष अच्छा असर पड़ता रहता है।

अब हम सभी के लिए ये सोचने का मुद्दा है कि दीर्घायु बनने के लिए मनुष मात्र को 'सादा जीवन-उच्च विचार, ये ही है जीवन का सच्चा आधार' के सिद्धांत होने से उनका भविष्य उज्ज्वल और निरोगमय हो सकता है। अच्छे खान-पान और व्यवहार हमारे सुखमय जीवन की अच्छी कसौटी बन सकती है। शुद्ध जल, शुद्ध निरामिष भोजन और शुद्ध जलवायु मनुष्य को जीवनशक्ति देने में सक्षम रहती है।

25 फरवरी 2013 के 'आज' अखबार में ऐसी बात लिखी थी – 'भारतीय मूल के विश्व के सबसे उम्र दराज धावक ने हांगकांग मैराथन में 10 किलोमीटर की दौड़ एक घंटे 32 मिनट 28 सेकेंड में पूरी की थी। उन्होंने अपने 101 वर्ष के उम्र में टोरेंटो में पाँच घंटे 40 मिनट और चार सेकेंड में दिया था। एक अप्रैल 2013 में उनकी उम्र 102 वर्ष की होगी। अब उन्होंने इन दौड़ों से संन्यास लिया।' किसी व्यक्ति में जिजिविषा और लगन हो, तो वह बहुत कुछ कर सकता है।

दीर्घायु की एक बात – 'जापान में युवाओं से अधिक बुजुर्ग लोगों की संख्या है। 100 वर्ष की उम्र तक पहुँचना यहाँ बहुत सामान्य सी बात है। भोजन में यहाँ पर बहुत कम तेल का प्रयोग होता है एवं भाप में पके हुए भोजन का अधिक प्रचलन है। ग्रीन टी की यहाँ बहुत सेवन होता है और हरी-ताजी भाजियां (सब्जियां) हर भोजन में शामिल की जाती है।

दुनिया के कई देशों के लोगों ने स्वस्थ व लम्बे जीवन का आनन्द उठाया है और इसके लिए उन्होंने संतुलित आहार, तनावमुक्त हँसी-खुशी का जीवन अपनाया, जिसके कारण ये लंबी उम्र के अधिकारी बन सके। यदि पेट, ज्ञानेन्द्रिय और मस्तिष्क इन तीनों शक्ति को एक अच्छा भंडार माना जाता है। यदि तीनों ठीक ढंग से काम करते रहे तो जीवन क्षमता अंत तक साथ देती रहेगी।

स्वास्थ्य के मामले में डॉक्टर के विचारानुसार जिन्हें स्टोन, हाई ब्लड प्रेशर तथा शुगर का शिकायत हो, उन्हें दूध की बनी कोई वस्तु, मीठा, मिठाई, नमकीन, मजिए, पकौड़े, तीखी मिर्च वाली वस्तुएँ ज्यादा नहीं खानी चाहिए।

ऐसे में दूध, पालक, पत्ता गोभी, टमाटर खाने से पथरी की तकलीफ नहीं होती है। अधिक चटपटे मशालेदार खाने पर हाई ब्लड प्रेशर होकर ब्रेन हैमरेज का खतरा रहता है। खट्टी वस्तुएँ खाने से अल्सर की परेशानी पेट में हो सकती है। डायविटीज के हालत में मिठाई और मीठी वस्तुओं से इसका प्रकोप बढ़ता है।

Scanned by CamScanner

सभी बीमारियों का इलाज एक परहेज से भी हो सकता है। सादा जीवन, सादा खाना, उच्च विचार, ये ही है जीवन का सच्चा और अच्छा आधार।

मनुष्य के प्राण को सशक्त बनाने के लिए रामदेव बाबा के किताब 'प्राणायाम रहस्य' शरीर के लिए अच्छी जागृति का परिचालक है। विभिन्न प्राणायाम के माध्यम से किसी व्यक्ति का प्राण यदि सही ढंग से काम करता है तो उसका जीवन भविष्य उज्ज्वल बना रहता है। शरीर के सभी योगासन तथा स्वास प्रस्वास की प्रबलता जीवन के लिए सुखकर बनता रहता है। यदि योगासन के अलावा हमारे शरीर के भीतरी अंग दिल, फेफड़ा, किडनी, आमाशय, जिगर आदि का भी यदि अन्दरुनी योगाभ्यास प्रतिदिन किया जाय तो ऐसी स्थिति मे शरीर सशक्त रहता है, प्राण पर कोई गलत प्रभाव नहीं पड़ता है। जिससे भविष्य सुन्दर और उम्र बढ़ने पर कोई भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है।

थाइराईड ग्रंथि के सही कार्य से शरीर में सशक्तता रहती है। रीढ़ सही ढंग से रहने पर वृद्धावस्था में शरीर का ऊपर से झुकाव न रहता है तथा रीढ़ के अन्दरुनी में नर्वस से भी शरीर को सुखकर रखता है।

मैंने बरन संकल्प में कई बातें शरीर सम्बन्धी लिखा है, जो इस पत्रिका में छप गया है। वृद्धत्व सुख कैसे प्राप्त करें – नवम्बर 2017 में, सिर की सुन्दरता जून 2018 में, आँखों की बीमारी से रोक नवम्बर 2018 में, सच्चा जीवन आनन्द नवम्बर 2018 में छपा है। बरन संकल्प को पानेवाले उसे अवश्य पढ़े होंगे। सभी लोग मेरे द्वारा बताये गये बातों पर ध्यान देंगे, जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल बनता रहेगा।

प्रतिदिन लोगों को डेढ़–दो किलोमीटर चलना चाहिए। प्रतिदिन पाँच–छः गिलास पानी पीना चाहिए। यदि हो सके तो लहसुन का दो वाली को छिलकर चबाकर पानी पीने से ठंड के समय शरीर की अच्छी जागृति मिलता रहता है। इसके अलावा इससे दमा रोग से भी बचाव हो सकता है।

प्राणायाम में गहरी लम्बी स्वास द्वारा शरीर में अधिक से अधिक ऑक्सीजन पहुँचाई जा सकती है जो कि शरीर के मलों से मुक्त करती है। पूरक, कुंभक, रेचक की क्रियाओं द्वारा फेफड़े को शक्तिशाली बनने में सहायता मिलती है। लम्बे–लम्बे साँस लेना, खुली जगह पर विशेष पीपल पेड़ के नीचे लाभदायक है।

इस तरह का योगाभ्यास मैं प्रतिदिन सुबह में शरीर के भीतर के सभी अवयवों के साथ पाँच–सात मिनट तक करता हूँ। इसके अलावा हाथ, पैर, गर्दन, आँख का भी कसरत करता हूँ जिससे अभी मेरा उम्र अस्सी वर्ष तक पहुँचा है। मेरे शरीर में किसी तरह की भी परेशानी नहीं है।

युवा वर्ग को भविष्य बुढ़ापे जैसी परेशानी से बचाव के लिए कुछ बातें हैं। बड़े उम्र की ओर बढ़ने वाले व्यक्तियों को हृदय रोग अथवा अन्य परेशानी से बचने के लिए सभी को योगाभ्यास सिखना चाहिए। योग करने से अच्छी सेहत बनाने में ज्यादा मदद मिलता है। इसके अलावा डॉक्टर का निम्नलिखित सलाह है – 1. धुम्रपान या शराब नहीं पीना चाहिए। 2. तनाव से पूरी तरह बचना चाहिए। 3. रोज व्यायाम करें। खासकर 3–4 किलोमीटर की सैर हर सुबह–शाम या सप्ताह में 5 दिन जरुर करें। 4. खाना रेशेदार हो। जैसे हरी सब्जियाँ, फल, विन्स आदि हो। लेकिन तेल–घी, ज्यादा नमक, मीठा या माँस, अंडा वगैरह का सेवन अधिक न करें।

बढ़ते उम्र में जोड़ों व हड्डियों के दर्द कमी–कमी परेशानी होती है। इस दर्द को जड़ से मिटाना संभव नहीं है। हड्डियों के मजबूती और जोड़ों के दर्द के लिए खाने में कैल्शियम और प्रोटीन की मात्रा सही होनी चाहिए। इसके लिए दूध का सेवन आवश्यक है।

आँखों की परेशानी के लिए आँखों को दिन में दो–तीन बार साफ पानी से जरुर धोना चाहिए। इसके लिए भोजन में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, दूध व दूध से बने पदार्थ, हरी सब्जियां, फल आदि जरुर लेना चाहिए।

सही भोजन से दाँतों को भी मजबूती मिलती रहती है और वह दोष रहित रहते हैं। भोजन खाने पर बीस–पच्चीस बार खूब चबाकर खाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को मीठी चीजे कम खाना चाहिए, क्योंकि मीठा भी कभी–कभी दांतों की बीमारियों की खास वजह हैं।

Scanned by CamScanner

दाँतों को हर बार खाने के बाद जरूर अच्छी तरह से साफ करना चाहिए, क्योंकि दाँतों की सही सफाई न होने पर बैक्टीरिया पैदा होता है और दाँतों में सड़न पैदा होने लगता है। जो धीरे-धीरे मसूड़ों को नुकसान पहुँचाता है। अतः खाने के बाद सूखे नीम के टूथपिक से दाँतों के मध्य छिपे खाद्य पदार्थ को निकाल व ब्रश कर आठ-दस बार कुल्ला करना चाहिए। जिससे दाँतों की सफाई होती रहती है।

धूप से बचने के लिए शरीर को सही कपड़ों से ढकना चाहिए। जिससे त्वचा पर कोई परेशानी नहीं होती है।

पेट से जुड़ी बीमारियों से बचने के लिए गलत समय के भोजन से बचना चाहिए।

शरीर के स्वस्थता के लिए सही मुद्रा और पूरी नींद सबसे ज्यादा जरूरी है। सही दिशा में शरीर और मन मस्तिष्क को स्वस्थ रखना अच्छी सेहत के लिए जरूरी है। अच्छी मुद्रा और शारीरिक व्यायाम अच्छे पाचन शक्ति को बनाए रखता है और सेहत संतुलित शरीर के लिए जरूरी भी है।

कपाल भाती एवं भस्त्रिका आदि श्वास की क्रिया करने के रूप में मस्तिष्क की शुद्धि करता है साथ सर्दी, कफ, दमा वगैरह परेशानी को भी दूर करता है।

प्रताप नारायण बरनवाल
कैमा शिकोह, पटनासिटी

ऐतिहासिक दिन

पैंसठ साल का हूं। बचपन से सामाजिक क्रिया- कलापों में भाग लेता रहा। लम्बे समय से एक विचार आता रहा कि पाटलिपुत्र की धरती पर पूरे बिहार के बरनवाल जाति की रैली हो। परन्तु यह सपना पूरा नहीं हो पा रहा था। अनेक अवसरों पर इस पर चर्चा होती परन्तु साहस के अभाव में यह सपना पूरा नहीं हो पाता। आये दिन अनेक-जातियों की रैली होती तो मन में एक कसक छोड़ जाती। वह ऐतिहासिक दिन 20 जनवरी 2019 आ गया। घोषणा हो गयी कि इस दिन बापू सभागार, पटना में राजनीतिक प्रतिनिधि महासम्मेलन होगी। जिन लोगों ने इसकी घोषणा की वो सही मायने में बधाई के पात्र है। इस घोषणा में भी एक डर बना हुआ था कि लोग जूटेंगे की नहीं। बापू सभागार जिसकी क्षमता लगभग आठ हजार है वह भरेगी की नहीं। कई लोगों से सुनता रहा कि कुछ लोग भी आ जाये तो गनिमत होगी। परन्तु जो जन सैलाब पाटलिपुत्र की धरती पर उमड़ी, वह इतिहास के पन्ने पर अंकित हो गया। बापू सभागार तो भरा ही हजारों लोग हॉल में खड़े-खड़े अहिबरन की उद्घोषणा कर रहे थे। हजारों लोग बाहर और उससे भी अधिक सड़कों पर बरनवाल जाति की पहचान बने थे। पूरा पाटलिपुत्र बरनवाल जाति के नाम से गुंज रहा था। पटना पहुंचने वाली तमाम सड़कें गाड़ियों के काफिले से दिनभर बरनवाल जाति को एक नई पहचान के लिए उतावले हो रहे थे। हजारों छोटी-बड़ी गाड़ियां बैनर लगाये, नारों से गूंजते पटना की धरती पर दिन भर कुच करती रही। महीनों पहले से पूरा बिहार बरनवाल जाति के झंडों, बैनर और पोस्टर से सजा हुआ प्रतीत हो रहा था। गांव, प्रखण्ड और शहर सभी जगह रैली की तैयारी के लिए पूरा बिहार सजा था।

हमारी जाति की पहचान इस महासम्मेलन से बनी है। हम आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रुप से पिछड़े है। हमारी आबादी राज्य में अच्छी है परन्तु अपनी बात को उजागर करने में समर्थ नहीं हो पा रहे थे। इस महासम्मेलन ने बरनवाल जाति में एक नई ऊर्जा का संचार करने में हम निश्चित रुप से सफल हुए है। आने वाले दिनों में इसे निरंतर आगे बढ़ाते रहे तो आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रुप से हम आगे बढ़ेंगे।

इस राजनीतिक प्रतिनिधि महासम्मेलन की हमारी मुख्य मांग थी राष्ट्रीय स्तर की मंडल आयोग में बरनवाल जाति को शामिल कियाजाय। भूलवश इस आयोग में हम छूट गये है। मंडल आयोग में हम इसलिए

Scanned by CamScanner

शामिल नहीं हो सके कि इस आयोग के सदस्यों की नजर में बरनवाल जाति की पहचान ही नहीं मिली। जबकि वैश्य समाज की सभी जातियों को इसमें स्थान मिला। हमारी मांग में एक मांग यह भी है कि बिहार की पिछड़ी जाति में हमारा नाम है परन्तु अत्यन्त पिछड़ी जाति में हमें स्थान मिलना चाहिए। इस मांग की पात्रता के अनुरुप भी हम है। पिछड़ी जाति में शामिल होने की भी एक कहानी है। उस कहानी को याद करने का आज दिन है। जब पिछड़ी जातियों की सूची बनी उसमें हमारा नाम नहीं था। पाटलिपुत्र की धरती पर भुवनेश्वर प्रसाद बरनवाल हुआ करते थे। वे कांग्रेस के बड़े नेता थे। उनकी पहुंच तत्कालिक मुख्यमंत्री सत्येन्द्र नारायण सिंह से थे। उन्हीं के प्रयास से अंतिम समय में बरनवाल जाति को जोड़ा गया था। हजारों लोग पिछड़ी जाति में शामिल होने से लाभ प्राप्त किये है जिसे भूलाया नहीं जा सकता। मैं इस आलेख के माध्यम से भुवनेश्वर प्रसाद बरनवाल को याद करते हुए उन्हे पुरुष की संज्ञा देना चाहूंगा।

बरनवाल राजनीतिक प्रतिनिधि महासम्मेलन की जहां अनेक उपलब्धियां रही, वहां चन्द कमियां भी रह गयी। मैं उन कमियों की चर्चा नहीं करना चाहता। परन्तु भविष्य में इसे दूर होनी चाहिए। पूरे बिहार के प्रतिनिधियों की एक बैठक में समीक्षा की जानी चाहिए। समीक्षा में उपलब्धियां और कमियां सामने आ जायेगी।

मई 2020 में बिहार विधान सभा का चुनाव होना है। बरनवाल जाति को टिकट वितरण में सभी राजनीतिक पार्टियों से हिस्सा मिले। इसके लिए पाटलिपुत्र की धरती पर गांधी मैदान में फरवरी 2020 में एक विशाल रैली किया जाना चाहिए। इसकी तैयारी से पहले जिला स्तर पर हर जिले में राजनैतिक रैली किया जाय और अंत में पटना के गांधी मैदान में एक बड़ी रैली हो।

एक नई घोषणा कर यहां पर अपना कलम बंद करना चाहूंगा। अहिबरन की कसम खाता हूं अपने बच्चों को राजनीति में अवश्य भेजूंगा।

पी. सुरेन्द्र
रंगकर्मी, गया

एक निवेदन

लोकसभा का चुनाव नजदीक आता जा रहा है। सभी पार्टियों के नेताओं के धड़कने तेज होते जा रहे है। क्योंकि इस बार की जनता थोड़े आक्रोश में है और हो भी क्यूं नहीं। हर बार चुनाव आते ही सभी नेताओं के जुमले बाजी तेज हो जाते है चाहे वे किसी भी पार्टी के नेता क्यों ना हो। सभी अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से देश की आम जनता को ठगने की कोशिश करते है मैं ना तो किसी पार्टी का हू और ना ही किसी पार्टी का मैं सिफारिश ही कर रहा हू मैं आपलोगों की तरह ही अपने भारतदेश का एक नागरिक हू

और अपने इस लोकतंत्र देश में हम आप सभी नागरिक जो मतदान करने योग्य है, अपने मतों से ही सरकार बनाते है इस आशा से कि ये हमलोगों के लिए, हमारे देश के लिए बहुत कुछ करेंगे। मगर क्या ऐसा होता है ? ये नेता अपना पद सम्भालते ही भुल जाते है कि ये अपने-अपने क्षेत्र की जनता से कुछ वादा भी किये थे।

आज हमारे देश में ऐसे कई जरुरी मुद्दे है, जिन पर इन नेतागण को विचार अवश्य करना चाहिये और अगर इन मुद्दों पर विचार किया गया तो हमारे देश को बहुत से नागरिकों की परेशानियां कम हो जाएगी। जैसे – प्राइवेट स्कूल की फीस, डॉक्टर की फीस, प्राइवेट नर्सिंग होम या अस्पताल का इलाज, महंगी दवाईयां, बढ़ती महंगाई जैसे कई ऐसे मुद्दे है, जिस पर किसी भी नेता लोगों का ध्यान ही नहीं है।

ये लोग उड़न-खटोला से उड़कर आयेंगे और चिकनी-चुपड़ी बातें करके हमें बेवकुफ बनाकर चले जायेंगे। मगर मेरा आप सभी से "एक निवेदन" है कि इस बार नहीं। इस बार हम उनके जुमले पर नहीं आयेंगे और अभी चुनाव आने में तीन महिना बाकी है। इसलिए बढ़िया से सोच-विचार कर अपने समझ से ही अपना वोट करें और उसी नेता को अपना वोट दे, जिस पर आपको लगे कि वो नेता आपके सुख-दु:ख में आपको साथ दे सकता है और देश के जरुरी मुद्दो पर विचार कर सकता है।

वरना, फिर कहीं आप पाँच साल के लिए अपने आपको ठगा-ठगा सा महसूस ना करें।

धन्यवाद,जय हिन्द।

समीरकान्त लाल, पटना-4

Scanned by CamScanner

बरनवाल सेवा सदन न्यास, धनबाद

बरनवाल सेवा सदन, धनबाद के निर्माणार्थ सहयोग करें। सहयोग करने वाले का नाम बरन संकल्प में प्रकाशित किया जायेगा।

1. 10000/– या ऊपर का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम।
2. एक लाख रुपये का सहयोग देने वालों का शीलापट्ट पर नाम के साथ–साथ हॉल में तैलिय चित्र।
3. दो लाख पचास हजार रुपये का सहयोग देने वालों के नाम पर एक वातानुकूलित कमरा, हॉल में तैलिय चित्र व शीलापट्ट पर नाम।
4. दो लाख पचास हजार रुपये से अधिक का सहयोग देने वाले समाज के भामाशाहों का नाम शीलापट्ट पर वरीयता क्रम से दी जायेगी।

सेवा सदन भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर है, समाज के सभी सम्मानित सदस्यों से सहयोग की अपील है। आप हमें सीधे हमारे एकाउंट में भी राशि जमा कर सहयोग कर सकते हैं। हमारा एकाउंट विवरण निम्नवत है–

बरनवाल सेवा सदन न्यास

बैंक : यूको बैंक, हीरापुर ब्रांच
धनबाद

खाता सं. : 01910100935484

IFSC Code : UCBA0000191

इस संदर्भ में आप निम्नवत लोगों से भी संपर्क कर सकते हैं।

पी.एल. बरनवाल	**बालेश्वर प्रसाद**
अध्यक्ष	सचिव
मो. : 9431187661	मो. : 9431725382
7004188137	7717762093

Scanned by CamScanner

हेल्दी रेसिपी

पालक थंबुली

सामग्री – पालक 14 पत्ता, जीरा 1 चम्मच, साबुत काली मिर्च 3, मिर्च 2 कद्कस किया नारियल 1/4 कप, खट्टा दही 1 कप, घी 1 चम्मच, नमक स्वादानुसार।

छौंक के लिए – घी 1 चम्मच, सरसों 1/2 चम्मच, जीरा 1/2 चम्मच, करी पत्ता 10, लाल मिर्च 1

विधि – पालक को साफ करके धो लें और बारीक टुकड़ों में काट लें। पैन में आधा चम्मच घी गर्म करें और उसमें जीरा, काली मिर्च, हरी मिर्च और पालक के पत्ते डालें। एक मिनट तक भूनें। गैस ऑफ करें और इसे पूरी तरह से ठंडा होने दें। ग्राइंडर में जीरा–काली मिर्च व पालक के पत्ते, नमक, नारियल और थोड़ा–सा पानी डालकर पीस लें। इस मिश्रण को दही में डालकर मिलाएं। ध्यान रहे कि यह मिश्रण पतला होना चाहिए। पैन में छौंक के लिए घी गर्म करें और उसमें छौंक की सभी सामग्री डालें। जब छौंक तैयार हो जाए तो उसे तैयार मिश्रण में डालकर मिलाएं। इसे आप गर्म चावल और अचार के साथ सर्व भी कर सकती हैं और सिर्फ ड्रिंक के रुप में पी भी सकती हैं।

पालक मखाना

सामग्री – पालक 300 ग्राम, कटा टमाटर 2, मखाना 1 कप, जीरा 1 चम्मच, मिर्च 2, गरम मसाला पाउडर 1 चम्मच, लाल मिर्च पाउडर 1/2 चम्मच, हल्दी पाउडर 1/2 चम्मच, दालचीनी 1 टुकड़ा, दूध 2 चम्मच, घी 1 चम्मच, नमक स्वादानुसार, तेल आवश्यकतानुसार।

विधि – पालक को अच्छी तरह से धो लें। कुकर में पालक, चुटकी भर हल्दी और दो हरी मिर्च डालकर दोसीटी लगाएं। कुकर का प्रेशर अपने–अपने निकलने दें और उसके बाद पालक को ग्राइंडर में डालकर बारीक पेस्ट तैयार कर लें। नॉनस्टिक पैन में घी गर्म करें और मखाना को भून लें। उसी पैन में थोड़ा–सा तेल गर्म करें और उसमें बारीक कटा टमाटर, नमक व सभी सूखे मसाले डालें। तेल के अलग होने तक मसालों को भूनें और उसके बाद उसमें पालक वाला मिश्रण डालें। अच्छी तरह से मिलाएं और धीमी आंच पर तीन से चार मिनट तक पकाएं। सबसे अंतर में भुने मखाने डालकर मिलाएं और ग्रेवी में एक उबाल लाने के बाद बंद कर दें। पूरी या पुलाव के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

केसर पिस्ता कुल्फी

सामग्री – दूध 3 लीटर, चीनी 1/2 कप, केसर 1 चम्मच, इलायची पाउडर 2 चम्मच, बारीक कटा पिस्ता 1/2 कप

विधि – दूध को लगातार चलाते हुए आधा होने तक मध्यम आंच पर उबालें। ध्यान रहे कि दूध जले नहीं क्योंकि जले हुए दूध से आने वाली बदबू आपके सारी मेहनत पर पानी फेर देगी। अब दूध में चीनी डालकर मिलाएं। जब चीनी घुल जाए तो उसमें इलायची पाउडर, केसर और बारीक कटा पिस्ता डालें। गैस बंद कर दें और मिश्रण को पूरी तरह से ठंडा होने दें। कुल्फी के सांचे में तीन–चौथाई हिस्से तक इस मिश्रण को भरें। फ्रीजर से कम–से–कम 15 घंटे तक रखे और फिर पेश करें।

संतरा कुल्फी

सामग्री – दूध 3 लीटर, चीनी 1/2 कप, संतरे का गूदा 2 कप, ऑरिंज जैम 2 चम्मच

विधि – संतरे को बीचोबीच काट लें और संतरे का गूदा पूरी तरह से निकाल लें। ध्यान रखें कि संतरे का छिलका टूटे नहीं। संतरे के फांके पर लगा छिलका और रेशा निकाल लें। संतरे के बीज को भी हटा दें और गूदे को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लें। अब दूध को उबाले और लगाचार चलाते हुए उसकी मात्रा आधी होने तक उबालें। ध्यान रखें कि दूध जले नहीं। अब चीनी को दूध में डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। अब दूध को पूरी तरह से ठंडा होने दें। जब दूध ठंडा हो जाए तो उसमें संतरे का गूदा और जैम डालकर मिलाएं। अब इसे मनचाहे बर्तन में रखकर कम–से–कम 15 घंटे के लिए फ्रीजर में रखें। संतरे के आधे कटे छिलके में डालकर सर्व करें। आप चाहें तो इस कुल्फी को मनपसंद बाउल में डालकर भी सर्व कर सकती हैं।

– संकलित

Scanned by CamScanner

अनुभूत योग–माला

घरेलू दवाइयाँ

झड़ते बालों को रोकने के लिए – कनेर (करवीर) की जड़ की छाल 10 ग्राम तथा दुधी 10 ग्राम लेकर इन्हें दूध में पीस लें। पके बालों को उखाड़कर उक्त रस का लेप करें।

झाई – पीठे का छिल्का पानी में पीसकर झाई वाले स्थान पर एक सप्ताह तक लगाइए। दूसरे सप्ताह तुलसी के पत्ते जल में पीसकर झाई पर लगाइए। इस प्रकार दो सप्ताह करने से झाई दूर होगी।

टॉन्सिल – नमक 6 ग्राम, बिंडगर (बायबिडंग) 6 ग्राम, हल्दी साबुत 6 ग्राम और पानी 500 ग्राम लें। सब चीजों को पानी में उबालकर कपड़े से छान लीजिए। सुहाते–सुहाते (कोसे–कोसे) इस पानी से गरारे कीजिए।

तिल्ली – यदि तिल्ली बढ़ गई हो तो जामुन का सिरका पानी में घोलकर पियें। दो चम्मच सिरका, एक गिलास पानी रहे।

तुतलापन – रात को सोने से 5 मिनट पहले 2 ग्राम भुनी हुई (आग पर खील की हुई) फिटकरी मुँह में रखकर सो जाएँ। 1–2 मास में लाभ होगा।

दाँत दर्द – नौशादर तथा सोंठ बराबर–बराबर लेकर पीस लीजिए। इसे दुखते दाँत के इर्द–गिर्द (मसूड़े पर) मलिए। यदि दाँत या दाढ़ में खोड़ है, तो जरा–सा उस खोड़ में भी भर दीजिए।

दन्तमंजन (नीलम दन्तमंजन) – दालचीनी 10 ग्राम, काली मिर्च 10 ग्राम, धनिया भुना हुआ 10 ग्राम, आग पर भुना हुआ नीला थोथा 10 ग्राम, कपूरकचरी 10 ग्राम, सेंधा नमक 10 ग्राम, मस्तगी 10 ग्राम, चोबचीनी 10 ग्राम, इन सब चीज़ों को खूब कूट कर बारीक कर लें। फिर कपड़छन कर लें। कपड़े के ऊपर रहे चूर्ण को फिर से और बारीक पीसिए। इस मंजन से दाँत जीवनभर स्वच्छ तथा मजबूत रहेंगे।

मंजन (वज्रदन्ती) – सूखी 10 ग्राम, बहेड़े (सूखे) 10 ग्राम, आँवले (सूखे) 10 ग्राम, काली मिर्च 10 ग्राम, पिप्पली 10 ग्राम, लवंग 5 दाने (अदद), तूतिया (आग पर फूल किया हुआ) 2 ग्राम, काला नमक 2 ग्राम, सफेद नमक 2 ग्राम, सेंधा नमक 2 ग्राम, माजूफल 10 ग्राम, इन सबका चूर्ण बनाकर प्रतिदिन प्रातः–सायं मंजन करने से दाँत वज्र के समान हो जाएँगे।

दमा – करील (पंजाबी डेले, एक जंगली झाड़ी) की लकड़ी की भस्म प्रतिदिन आधा ग्राम पान के साथ खाने से दमा मिट जाता है।

दर्द गठिया – बढ़िया केसर 6 ग्राम, सुरंजन मीठी 20 ग्राम, चीनी (खाँड) 10 ग्राम, इन तीनों को बारीक पीसकर कपड़छन करके 32 पुड़िया बना लीजिए। 1–1 पुड़िया सवेरे–शाम एक–एक प्याला दूध के साथ सेवन कीजिए।

दस्त न होना – 1 नींबू के रस में 1 जायफल को पीसकर चाटिए। मल खुलकर आ जाएगा।

दिमागी कमजोरी – 20 ग्राम ताजा मक्खन में 5 ग्राम काली मिर्च का चूर्ण तथा 20 ग्राम मिश्री अथवा चीनी खूब मिलाकर चाटिए दिमागी खुश्की तथा कमजोरी दूर होगी।

नई जवानी के लिए – सूखे आँवले का चूर्ण 500 ग्राम लेकर उसे आँवले के रस में भिंगो दीजिए। इसे खरल में रगड़–रगड़कर जलीय अंश सुखाइए। सूखने पर आँवले का रस और डालकर पुनः घोटिए। इसी प्रकार कुल 21 बार आँवले का रस डालकर घोटने के बाद सूखा लें। इस चूर्ण में से 5–5 ग्राम की पुड़िया बना लीजिए। प्रातः–सायं एक–एक पुड़िया 1–17 प्याला गुनगुने दूध से सेवन कीजिए।

पचरी (अश्मरी) – 6 ग्राम पपीते की जड़ सिल पर पीसकर बारीक कीजिए। इसे 10 ग्राम जल में घोलकर छान लीजिए। इस छने हुए पानी को पीने से 21 दिन में पत्थरी गलकर निकल जाती है।

पेचिश – छोटी पीपल (पिप्पली) का महीने चूर्ण 10 ग्राम लेकर 1–1 ग्राम की पुड़ियाँ बना लें। 1–1 पुड़िया प्रात–सायं कवोष्ण दूध 1 प्याला के साथ लें।

बगल–गन्ध – जामुन के पत्तों को पानी में पीसकर बगल में लगाइए।

– संकलित

Scanned by CamScanner

IITians HUB

Hub of Advanced Coaching

(ONLY IITIAN FACULTIES)

TARGET
JEE MAINS, ADVANCED

XI, XII
CBSE / ICSE / STATE

Free Demo Classes
From 25th March Onwards

Admissions Open

Mr. GAURAV BARANWAL
Director and HOD Physics
B. Tech IIT Dhanbad
Ex. Tata Motor Limited
5yrs Teaching Exp.

FOR MORE DETAILS VISIT OUR CENTER

Center :
Below Dena Bank,
Saraidhela, Dhanbad
Contact : 8877589749, 7992217886

12/19

Scanned by CamScanner

With best compliments from

You fantasize we materializse...

Deepak Baranwal **Praveen Barnwal**

Golden Estate

Property Consultant & Finance Advisor

Flat No. 146. Pocket-1, Sector-19, Dwarka, New Delhi-110075
Tel: 011-28041188, 2804199 Mob.: 9810108174, 9810008139
Email: goldenpropmart@gmail.com

12/19

Scanned by CamScanner